हयाते सय्यदुल अम्बिया
और
अक़ीदा हाज़िर व नाज़िर
मुअल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी

हयाते सय्यदुल अम्बिया
और
अ़क़ीदा हाज़िर व नाज़िर

(क़ुरान व अहादीस की रोशनी में)

मुअ़ल्लिफ़

डॉ०-आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

09897626182

नाम किताब– **हयाते सय्यदुल अम्बिया**
और अक़ीदा हाज़िर व नाज़िर

मुअल्लिफ़–**डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी**

सने इशाअत–मई– **2021**

कम्पोज़िंग–**जुनैद अली क़ादरी सफ़वी &**
ज़ैनुल आबदीन क़ादरी सफ़वी

क़ीमत– **70/-** रूपये

–: मिलने के पते :–

मदार बुक सेलर
मकनपुर (कानपुर)
09695661767

जावेद बुक सेलर
करहल (मैनपुरी)
09634447000

अनवार उर्दू बुक डिपो
बिसात खाना मैनपुरी
09319086703

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

786/92

अल्ह़म्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तई़नुहू व नस्तग़फ़िरुहु वनुअ़मिनू बिही व नतावक्कलू अ़लैहि व नाऊजू बिल्लाहि मिन शुरुरि अ़न फुसिना वमिन सइयेआति आअ़मलिना मंई युदलिलहु फ़ला हादिया लहू वनशहदु अन्ना मुह़म्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू ०

तमाम खूबियाँ और ताअ़रीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के लिये हैं जो तमाम कायनात का एक अकेला मालिक व ख़ालिक़ है जिसने अपनी रह़मत व मेहरबानी की चादर से अपने बन्दों को ढाँप रखा है जिसने कायनात की तख़लीक़ व तरतीब को हुस्नो जमाल बख़्शा जो दिलो के पोशीदा राज़ो पर मुत्तलाअ़ है जो तमाम ह़िकमतों व ग़ैबों का जानने वाला है कायनात का कोई ऐसा ज़र्रा नहीं जो उसकी ह़म्दो सना न करता हो हर शैः उसके ताबेअ़ व क़ब्ज़े कुदरत में है जो अपनी बढ़ाई और बुलन्दी में यकता है।

उसका कोई शरीक नहीं जो नेअ़मतें व रिज़्क़ अ़ता करने वाला, हिदायत देने वाला, हिफ़ाज़त करने वाला, बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान व करीम है और दुरुदो सलाम हो रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम पर जो ज़ाहिर

व बातिन में तय्यब व ताहिर हैं जो तमाम ऐबो नक़ाइस से पाक उ़लूमे ग़ैब के जानने वाले हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने नूर व हिदायत के साथ मबऊ़स फ़रमाया जिनके नूर से दो आ़लम में उजाला है अल्लाह तआ़ला ने जिन्हें कौसर अ़ता की जिस पर रोज़े क़यामत प्यासे मोमिन आयेंगे और सैराब होकर जायेंगे जिन्होंने इन्सान को गुमराहियों के अंधेरों से निकालकर राहे हिदायत और राहे निजात दिखाई अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब को औसाफ़ व अख़लाक़ में बुलन्द और बे मिस्ल और तमाम अम्बिया-किराम अ़लैहिमुस्सलाम का सरदार बनाया और अपने नूर से हुजूरे पाक के जिस्मे अत्हर को तख़लीक़ किया जिनका ज़ाहिर व बातिन सब नूर है

और रहमत व सलामती हो आपके अहले बैत अत्हार पर जो दीन की हिफ़ाज़त और बक़ा के लिये कुरबान हो गये जो रोज़े क़यामत मुहिब्बाने अहले बैत की निजात का ज़रिया होंगे और हर आफ़त व मसाइब के दरमियान ढ़ाल होंगे और रहमत व सलामती हो आपकी अज़वाजे मुतहरात और आपकी आल व असहाव और तमाम औलिया-ए-किराम व सूफ़िया-ए-इ़ज़ाम पर और उन पर जो अल्लाह तआ़ला के मुक़र्रब व मख़सूस बन्दे हैं।

-: तम्हीद :-

अ़ाम इन्सान की हयात और वफ़ात और अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) की हयात और वफ़ात की नौअ़य्यत मुख़्तलिफ़ होती है खुसूसन नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की हयात व वफ़ात की नौअ़य्यत सबसे जुदा है क्योंकि आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) क़दरो मन्ज़िलत व इज़्ज़तो शरफ़ के सबसे बुलन्द मक़ाम पर फ़ाइज़ हैं और मर्तबा-ए-नबूवत में सबसे अफ़ज़लो आअ़ला हैं आप (अ़लैहिस्सलाम) बाद वफ़ात भी हमेशा के लिये हयाते हक़ीक़ी व रुहानी और जिस्मानी के साथ ज़िन्दा हैं जो कि कुरान व अहादीस के सरीह दलाइल व नसे क़तई से साबित है और जो उनके ज़िन्दा होने को नहीं मानता गोया वो कुरानो हदीस का मुन्किर है और कुरानो हदीस का मुन्किर ख़ारिज़े अज़ इस्लाम है

रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) अपनी क़ब्रे अनवर में ज़िन्दा हैं और आप जहाँ चाहें वहाँ तशरीफ़ ले जाते हैं और आप तमाम उम्मत के अहवाल को देख रहे हैं यानी आप हाज़िर व नाज़िर हैं और आप तमाम उम्मत के आअ़माल पर मुत्तलाअ़ हैं और तमाम कायनात पर आप अपनी हयात की तरह तसर्रुफ़ रखते हैं और अल्लाह तअ़ाला की तरफ़ से आप रिज़्क़ पाते हैं तमाम अहले सुन्नत वल जमाअ़त

का इज्तिमाअ़ी अ़क़ीदा है कि सब अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) अपनी अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं और नमाज़ व इ़बादात व ज़िक्रे इलाही में मशगूल हैं और इनकी हयात सिर्फ़ रुहानी नहीं है बल्कि इनकी हयात जिस्मानी भी है जो दुनियाँवी हयात के मिस्ल है और अ़क़ीदा हयातुन्नबी (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) पर अकाबिरीने उ़ल्मा-ए -उम्मत व बुजुर्गाने दीन की बकसरत मुताफ़र्रिक़ तसरीहात के अ़लावा तसानीफ़ भी शाहिद हैं।

बाअज़ बदअ़क़ीदा और बेइ़ल्म लोग कहते हैं कि हर इन्सान मरकर मिट्टी में मिल जाता है और उसका जिस्म सहीह व सालिम नहीं रहता हत्ता कि अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) के मुताअ़ल्लिक़ भी ऐसा ही अ़क़ीदा रखते हैं और ऐसा अ़क़ीदा व गुमान रखना सरीह गुमराही और मुनाफ़िक़त की दलील है।

मौत के बाद रुह तो हर किसी की ज़िन्दा रहती है ख़्वाह वो मोमिन की रुह हो या काफ़िर की रुह हो मगर शुहदा की ज़िन्दगी और उन्हें रिज़्क़ का मिलना जो कि नसे क़तई से साबित है और अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) की हयात तो शुहदा से भी बुलन्द व बाला है क्योंकि शुहदा को ये मक़ाम अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) के सद्क़े व तुफ़ैल और उनकी इत्तेबाअ़ के बाइस मिला तो जिनके सबब से शुहदा को ये मक़ाम मिला तो अम्बिया के मक़ाम का आ़लम क्या होगा

शहीद की बीवी बाद इ़द्दत किसी दूसरे शख़्स से निकाह कर सकती है मगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम के बाद वफ़ात आपकी अज़्वाजे मुताह्रात (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुन्ना) से निकाह करना हराम है क्योंकि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ज़िन्दा हैं और आपकी हयाते मुबारका शुहदा से अफ़ज़ल व अरफ़ाअ़ है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और न ये कि तुम उनके बाद अबद तक उनकी अज़्वाज से निकाह करो ये अल्लाह के नज़्दीक बड़ा गुनाह है। (सू०–अहज़ाब–33/53)

फ़क़ीर

डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़्वी

09897626182
09045442223

-: हयातुन्नबी कुरान की रोशनी में :-

हज़रत सुलेमान (अ़लैहिस्सलाम) जिन्नों से मस्जिद बैतुल मुक़द्दस की ताअ़मीर करा रहे थे कि अल्लाह तआ़ला ने आपको मौत के वक़्त से मुत्तलाअ़ फ़रमां दिया तो आप (अ़लैहिस्सलाम) ने जिन्नों को एक नक्शा बनाकर दिया और खुद एक शीशे के मकान में इ़बादत के लिये दर'वाज़ा बन्द करके अ़सा से टेक लगाकर हस्बे आ़दत इ़बादत के लिये खड़े हो गये और किसी को भी आपकी वफ़ात का एहसास तक न हुआ और आपकी वफ़ात के बाद मुद्दते दराज़ तक जिन्न बादस्तूर मस्जिद की ताअ़मीर करते रहे और ये समझते रहे कि हज़रत सुलेमान (अ़लैहिस्सलाम) ज़िन्दा हैं।

हज़रत सुलेमान (अ़लैहिस्सलाम) का अ़रसा दराज़ तक उसी हाल पर रहना उन जिन्नात के लिये कुछ हैरत का बाइस न था क्योंकि आप अक्सर महीनों इसी तरह इ़बादात में मशगूल रहा करते थे फिर जब ताअ़मीर पूरी हो चुकी तो अल्लाह तबारक व तआ़ला के हुक्म से दीमक ने आप अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम का अ़सा खा लिया और आपका जिस्म मुबारक ज़मीन पर गिर गया तब सबको आप (अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम) की वफ़ात का हाल माअ़लूम हुआ कि आप वफ़ात पा

चुके हैं तो इससे वाज़ेह हुआ कि अम्बिया किराम अ़लैहिमुस्सलाम पर मौत तारी होने के बाद उनका जिस्म सहीह व सलामत रहता है यहाँ तक कि औलिया अल्लाह और नेक सालिहीन बन्दे जिन्हें अल्लाह तअ़ाला की कुर्बत का मुक़ाम हासिल है या जिसे अल्लाह चाहे वो अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा रहते हैं और उनके अजसाम सही व सलामत रहते हैं और उनकी जिस्मानी हयात की कैफ़ियात हमारे दायरा-ए-इदराक व एहसास और शऊर से ख़ारिज़ है।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-

फिर जब हमने सुलेमान (अ़लैहिस्सलाम) पर मौत का हुक्म सादिर फ़रमां दिया तो उन (जिन्नात) को उनकी मौत पर किसी ने आगाही न की सिवाये ज़मीन की दीमक के जो उनके अ़सा को खाती रही फिर जब आप का जिस्म ज़मीन पर आ गया तो जिन्नात पर ज़ाहिर हो गया (कि हज़रत सुलेमान अ़लैहिस्सलाम वफ़ात पा चुके हैं) (सू०-सबा-34/14)

हज़रत सुलेमान (अ़लैहिस्सलाम) अ़सा के सहारे खड़े हुये थे और उसी हाल में आपकी रुह क़ब्ज़ कर ली गई और एक साल तक इन्सान व जिन्नात यही गुमान करते रहे कि आप ज़िन्दा हैं और इस दरमियान में आपके जिस्म मुबारक में किसी तरह की कोई तब्दीली नहीं हुई और न आपके चेहरे मुबारक की चमक व रौनक में कोई

फ़र्क़ आया और न आपके रोअ़ब व जलाल में कोई फ़र्क़ आया इससे वाज़ेह हुआ कि अम्बिया किराम अ़लैहिमुस्सलाम की हयात बाअ़दल वफ़ात जिस्मानी होती है और मौत से उनका जिस्म बोसीदा नहीं होता और उनकी मौत और हयात में कोई फ़र्क़ नहीं होता बाक़ी रहा ये कि वो अ़सा के सहारे खड़े थे और जब दीमक ने उनके अ़सा को खा लिया तो वो ज़मीन पर आ रहे इसमें हिकमत ये थी कि अल्लाह तबारक व तआ़ला को उनकी तजहीज़ व तकफ़ीन और तदफ़ीन करानी थी अगर ऐसा न होता तो ये उमूर कैसे वाक़ैअ़ होते कि अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) अपनी कब्रों से निकलकर ज़मीनों आसमानों के अतराफ़ में आते जाते हैं और तसर्रुफ़ करते हैं इस पर मुस्तहकम दलील अहादीस हस्बे ज़ैल हैं।

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) वादी अज़रक़ से गुज़रे तो आपने पूछा ये कौन सी वादी है लोगों ने कहा कि ये वादी अज़रक़ है फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि गोया मैं मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को वादी के मोड़ से उतरते हुये देख रहा हूँ और वो बुलन्द आवाज़ से तलबिया (अल्लाहुम्मा लब्बैक) पढ़ रहे थे फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) एक हरशा की घाटी पर पहुँचे तो पूछा ये कौन सी घाटी है लोगों ने कहा कि ये हरशा की घाटी–

है आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया गोया मैं युनूस (अ़लैहिस्सलाम) को देख रहा हूँ जो सुर्ख़ रंग की ताक़त वर ऊँटनी पर सवार हैं जिसकी नकेल खजूर की छाल की है और उन्होंने एक अद्ना जुब्बा पहना हुआ है और वो अल्लाहुम्मा लब्बैक कह रहे हैं।
(मुस्लिम–सही–1/275-ह०–420)
(इब्ने माजा–सुनन–2/395-ह०–2891)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अन्हुमा) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना कि जब मैं नींद में था तो मैंने अपने आपको काअ़बा का तवाफ़ करते हुये देखा और मैंने देखा कि एक आदमी जिसका रंग गन्दुमी है और उसके बाल सीधे हैं और वो दो आदमियों के दरमियान है और उसके सर से पानी टपक रहा है या उसका सर पानी गिरा रहा है मैंने पूछा ये कौन है तो जवाब देने वालों ने जवाब दिया कि ये ईसा (अ़लैहिस्सलाम) हैं।
(मुस्लिम–सही–1/280-ह०–429)

हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) हाज़िर व नाज़िर हैं

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
ऐ नबी मुकर्रम बेशक हमने आपको मुशाहदा करने वाला और (हुस्ने आख़िरत की) खुशख़बरी देने वाला और (अ़ज़ाबे आख़िरत का) डर सुनाने वाला बनाकर भेजा और अल्लाह के इज़्न से अल्लाह की तरफ़ दाअ़वत देने वाला और मुनव्वर करने वाला आफ़ताब (बनाकर भेजा है)
(सू०-अहज़ाब-33/45,46)

अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को शाहिद बनाकर भेजा और शाहिद का माअ़ना होता है हाज़िर व नाज़िर यानी मुशाहदा करने वाला और एक माअ़नी है गवाह और इसका माअ़नी अगर गवाह किया जाये तो भी मतलब वही बनेगा क्योंकि गवाह को भी इसलिये शाहिद कहते हैं कि वो मुशाहदा के साथ इ़ल्म रखता है और उसको बयान करता है यानी आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ज़िन्दा हैं और क़यामत तक होने वाली तमाम मख़लूक़ के शाहिद हैं और उनके आअ़माल व अफ़आ़ल और अहवाल व तस्दीक़ और तकज़ीब व हिदायत और गुमराही सबका मुशाहदा फ़रमाते हैं और हाज़िर का माअ़ना होता है जो सामने मौजूद हो यानी ग़ायब न हो और जो लोग हुजूर सल्लल्लाहु

तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को मआ़ज़ अल्लाह मुर्दा गुमान करते हैं वो इस आयते करीमा से इ़बरत हासिल करें व नाज़िर का माअ़ना है देखने वाला यानी हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ज़िन्दा हैं व तमाम मख़्लूक़ का मुशाहदा करते हैं

बाअ़ज़ लोग ये एतराज़ करते हैं कि तुम रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को हाज़िर व नाज़िर भी कहते हो और मजालिसे मीलाद में बुलन्द आवाज़ से सलातो सलाम भी पढ़ते हो जबकि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के सामने बुलन्द आवाज़ से बात करना जाइज़ नहीं है तो इसका जवाब ये है कि हाज़िर व नाज़िर का ये माअ़ना नहीं है कि आप हर जगह हर वक़्त मौजूद हैं ये तो सिर्फ़ रब तआ़ला की शान है बल्कि इसका माअ़ना ये है कि क़ुदसी क़ुव्वत वाला यानी एक ही जगह रहकर तमाम आ़लम को अपने हाथ की हथेली की तरह देखने वाला और दूर व क़रीब की आवाज़ें सुनने वाला व एक आन में यानी लम्हे भर में तमाम आ़लम की सैर करने वाला और हज़ारों मील दूर हाजत मन्दों की हाजत र'वाई करने वाला हो और ये रफ़्तार ख़्वाह रुहानी हो या जिस्मानी हो या उसी जिस्म से हो जो क़ब्रे अनवर में मदफून है।

यानी आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) अपनी क़ब्र मुबारक में ज़िन्दा व मौजूद हैं और कायनात आपके सामने है और आप उसको देख रहे हैं-

और जब चाहें जहाँ चाहें वहाँ तशरीफ़ ले जा सकते हैं इसकी ताईद कुरान व अहादीस में है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
''और अब तुम्हारा अ़मल (दुनियाँ में) अल्लाह (भी) देखेगा और उसका रसूल भी (देखेगा)।
(सू०-तौबा-9/94)''

➡ हज़रत सूबान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मेरे लिये ज़मीन को समेट दिया तो मैंने उसको शर्क़ ता ग़र्क सब तरफ़ से देख लिया।
(मुस्लिम-सही-6/413-ह०-7258)
(अबू दाऊद-सुनन-4/265-ह०-4252)
(तिर्मिज़ी-सुनन-2/71-ह०-2176)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने सारी दुनियाँ मेरे सामने कर दी लिहाज़ा मैं सारी दुनियाँ को और जो कुछ भी दुनियाँ में क़यामत तक होने वाला है तो मैं उसको और उसमें ता क़यामत होने वाले अहवाल और वाक़्यात को सब का सब ऐसे देख रहा हूँ जैसे इस हाथ की हथेली को देख रहा हूँ।
(कंजुल उ़म्माल-6/203-ह०-31971)
(अबू नुऐम-हिल्यातुल औलिया-6/101)

➡ हज़रत असमा बिन्ते हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने सूरज ग्रहन के मौक़े पर बाद नमाज़ फ़रमाया कि हर वो शैः जो मुझे पहले दिखाई गई थी वो मैंने इस जगह खड़े देख ली हत्ता कि जन्नत व दोज़ख़ भी।
(बुख़ारी–सही–1/134-ह०–86)

बाअ़ज़ लोगों के ज़हन में एक सवाल पैदा होता है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने एक जगह खड़े होकर तमाम कायनात का मुशाहदा कैसे फ़रमां लिया तो इस इशक़ाल का हल ये है कि अल्लाह तआ़ाला अपने मुर्क़रब व बरगज़ीदा अम्बिया व औलिया को कई मोअ़जिज़ात व करामात व कमालात से नवाज़ता है जैसे हज़रत उजैर (अ़लैहिस्सलाम) का गुज़र एक ऐसी बस्ती से हुआ जो अपनी छतों के बल गिरी पड़ी थी उन्होंने अल्लाह तआ़ाला से उसके मुताअ़ल्लिक़ सवाल किया कि ऐ अल्लाह तू किस तरह इस बस्ती को हलाक हो जाने के बाद फिर से दोबारा ज़िन्दा करेगा। (सू०–बक़राह–2/259) तो अल्लाह तआ़ाला ने जवाब में बतौर मुशाहदा उन पर सौ साल के लिये मौत तारी कर दी फिर वो हुक्मे खुदा वन्दी से ज़िन्दा हुये और इसी तरह एक आ़लिमे दीन वली अल्लाह ने हज़ारों मील की मुसाफ़त से पलक झपकने से क़ब्ल तख़्ते बिलकीस हाज़िर कर दिया और इज़राईल (अ़लैहिस्सलाम)–

(मल्कुल मौत) जो कि एक फ़रिश्ता हैं जो लोगों की रुह क़ब्ज़ करने पर मामूर हैं मगर एक ही वक़्त में मुताफ़र्रिक़ जगहों से वो हज़ारो रुहों को क़ब्ज़ कर लेते हैं।

अहले सुन्नत का ये अ़क़ीदा है कि हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) ज़िन्दा हैं और हाज़िर व नाज़िर हैं और ये अ़क़ीदा आयाते कुरआनी व अहादीस और अक़वाले बुजुर्गाने दीन से साबित है इरशादे बारी तआ़ला है ''ये नबी मोमिनों के साथ उनकी जानों से भी ज़्यादा क़रीब हैं (सू०–अहज़ाब–33/6) और ये बात ज़ाहिर है कि क़रीब वो होता है जो हाज़िर भी हो और नाज़िर भी हो यानी हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) अपनी हक़ीक़ी ज़िन्दगी मुबारक के साथ उम्मत के अहवाल पर हाज़िर व नाज़िर हैं और हक़ीक़त के तलबगारों और उन हज़रात को जो आप अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ मुतव्वजे हैं आप उनको फ़ैज़ भी पहुँचाते हैं।

एक और मक़ाम पर इरशादे बारी तआ़ला है:-
बेशक हमने आपको (रोज़े क़यामत गवाही देने के लिये आअ़माल व अहवाले उम्मत का) मुशाहदा फ़रमाने वाला और खुशख़बरी सुनाने वाला और डर सुनाने वाला बनाकर भेजा है।
(सू०–फ़तह–48/8)

यानी बेशक हमने आपको अपनी उम्मत के आअ़माल व अहवाल का मुशाहदा फ़रमाने वाला–

बनाकर भेजा ताकि आप क़यामत के दिन उनकी गवाही दें और दुनियाँ में ईमान वालों व इताअ़त गुज़ारों को जन्नत की ख़ुशख़बरी देने वाला और काफ़िरों व नाफ़रमानों को जहन्नुम के अ़ज़ाब का डर सुनाने वाला बनाकर भेजा और जो आपकी ताअ़ज़ीम व फ़रमां बरदारी करें उन्हें फ़ज़्ले अ़ज़ीम की बशारत दो और जो आपकी ताअ़ज़ीम और फ़रमां बरदारी न करें उन्हें अ़ज़ाबे अलीम का डर सुनाओ।

तो जब आप शाहिद व गवाह हैं तो शाहिद को मुशाहदा की दरकार होती है तो फिर ये ज़रुरी है कि उम्मत के तमाम अफ़आ़ल व अक़वाल और आअ़माल व अहवाल आप के सामने हों और अल्लाह तआ़ला ने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को ये मर्तबा-ए-अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाया और आप अ़लैहिस्सलाम हक़ीक़ी हयात के साथ क़यामत तक अपनी उम्मत के तमाम आअ़माल व अहवाल और अक़वाल का मुशाहदा फ़रमाते हैं ख़्वाह वो आअ़माले इताअ़त हों या आअ़माले माअ़सियत हों

हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) तमाम उम्मतों के शाहिद व गवाह हैं

इरशादे बारी तआ़ला है :-
फिर उस दिन क्या हाल होगा जब हम हर उम्मत से एक गवाह लायेंगे और (ऐ हबीब) हम आपको उन सब पर गवाह और निगेहबान बनाकर लायेंगे
(सू०-निसा-4/41)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
और (ऐ मुसलमानों) उसी तरह (यानी जिस तरह हमने तुम्हें बेहतर क़िब्ला, बेहतर रसूल, बेहतर किताब अ़ता की और अ़क़ाइद व आअ़माल के लिहाज़ से) हमने तुम्हें बेहतरीन उम्मत बनाया ताकि तुम लोगों पर गवाह बनो और (हमारा ये बरगुज़ीदा) रसूल तुम्हारा गवाह और निगेहबान हो
(सू०-बक़राह-2/143)

इरशादे बारी तआ़ला है-
और (ये) वो दिन होगा (जब) हम हर उम्मत में उन्हीं में से उन पर एक गवाह उठायेंगे और (ऐ हबीबे मुकर्रम) हम आप को उन सब (उम्मतों और पैग़म्बरों) पर गवाह बनाकर लायेंगे।
(सू०-नह्ल-16/89)

ताकि ये रसूल तुम पर गवाह हो जायें।
(सू०-हज-22/78)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

बेशक हमने तुम्हारी तरफ़ एक रसूल भेजा है जो तुम पर (अहवाल का मुशाहदा फ़रमांकर) गवाही देने वाले हैं। (सू०–मुजम्मिल–73/15)

मज़कूरा आयाते करीमा हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की नाअ़ते अ़ज़ीम हैं कि आपकी निगाहे नूर ने तमाम अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) और उनकी उम्मतों के तमाम अहवाल व आअ़माल व अक़वाल को अपनी चश्मे नूर से मुलाहिज़ा फ़रमाया तभी तो रोज़े क़यामत आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) उन सब पर गवाह होंगे।

अल्लाह तअ़ाला ने अपने प्यारे हबीब को तमाम अव्वलीन व आख़िरीन और अम्बिया व मुरसलीन के लिये अदालते इलाहिया का गवाहे अ़ज़ीम बनाकर निहायत शान व शौकत से लायेगा कि सबकी निगाहें आमदे मुस्तफ़ा पर और सबके दिल शहादते अहमदे मुजतबा पर लगे होंगे और फिर ये गवाही रोअ़ब व दबदबे की होगी कि कोई इन्कार व एतराज़ न कर सकेगा और आपकी गवाही पर ही अबदी फ़ैसला–ए–खुदावन्दी होगा और रब तअ़ाला ने अनवारे मुहम्मदी के मुशाहदे जमाल को अ़ालमे नासूत के तमाम मख़्फ़ी हवास और ज़ाहिरी आअ़माल व अफ़अ़ाल व अक़वाल और अहवाल पर शहीदे अज़ली व शाहिदे अबदी और गवाहे मलाकूती बना दिया।

इन आयात में जो बात क़ाबिले तवज्जो है वो ये है कि किसी शैः का गवाह उसको बनाया जाता है जिसने अपनी आँखों से उस शैः का मुशाहदा किया हो जबकि तमाम अम्बिया-किराम व उनकी उम्मतें हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) से पहले ज़मानों की हैं तो फिर हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) ने उन अम्बिया-किराम व उनकी उम्मतों का हाल कैसे जाना तो वाज़ेह हुआ कि नबी करीम (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) उस वक़्त भी बाशक्ले पैकरे नूर जलवा फ़रमां थे जब हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) की तख़लीक़ भी न हुई थी।

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुझे कुरान पढ़कर सुनाओ तो मैंने अ़र्ज़ किया या-रसूलल्लाह भला मैं आपको क्या सुनाऊँ जबकि खुद आप पर कुरान नाज़िल हुआ है तो आप ने फ़रमाया कि मुझे दूसरों से सुनना अच्छा लगता है चुनांचा मैंने सू०-निसा पढ़नी शुरु करदी हत्ता कि मैं उस आयत पर पहुँचा ''भला उस दिन क्या हाल होगा जब हम हर उम्मत में से एक गवाह लायेंगे फिर आप को उन सब पर बा हैसियत गवाह खड़ा करेंगे'' तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया रुक जाओ मैंने देखा कि आपकी चश्मे मुबारक से आँसू बह रहे थे।
(बुख़ारी-सही-4/535-ह०-4582)
(तिर्मिज़ी-सुनन-2/624-ह०-3025)

रोज़े क़यामत तमाम अम्बियाकिराम अ़लैहिमुस्सलाम अपनी अपनी उम्मत के हर एक फ़र्द के नेक व बद के ईमान, कुफ़्र व निफ़ाक़ और तमाम अच्छे और बुरे आअ़माल की गवाही देंगे फिर उन सब पर हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को गवाह बनाया जायेगा और मुसलमान दुनियाँ व आख़िरत में गवाह हैं और मुसलमान की गवाही मोमिन व काफ़िर सब के बारे में शरअ़न मुअ़तबर है मगर काफ़िर की गवाही किसी भी मुसलमान के ख़िलाफ़ मुअ़तबर नहीं है।

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम ज़मीन में अल्लाह तआ़ला के गवाह हो।
(बुख़ारी–सही–2/124-ह०–1367)

और आख़िरत में इस उम्मत की गवाही ये है कि जब तमाम अव्वलीन व आख़िरीन जमाअ़ किये जायेंगे फिर कुफ़्फ़ारों से कहा जायेगा कि क्या तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से कोई डर सुनाने वाला और मेरे अहकाम पहुँचाने वाला आया था तो वो कुफ़्फ़ार इन्कार कर देंगे और कहेंगे कि ऐ मेरे रब मेरे पास कोई डर सुनाने व अहकाम पहुँचाने वाला नहीं आया था

फिर अम्बिया–ए–किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) से दरयाफ़्त किया जायेगा तो वो अ़र्ज करेंगे कि–

ऐ मेरे रब ये कुफ़्फ़ार झूठे हैं हमने इन्हें तबलीग़ की थी फिर इस बात पर अम्बिया-ए-किराम से काफ़िरों पर हुज्जत क़ायम करने के लिये दलील तलब की जायेगी तो अम्बिया-ए-किराम अ़र्ज़ करेंगे कि उम्मते मुहम्मदी हमारी गवाह है चुनांचा उम्मते मुहम्मदी उन अम्बिया-ए-किराम के हक़ में गवाही देगी कि अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) ने तबलीग़ की थी इस पर गुज़िश्ता उम्मत के कुफ़्फ़ार कहेंगे कि उम्मते मुहम्मदी को ये कैसे-माअ़लूम है ये तो हमारे बाद दुनियाँ में आये थे चुनांचा उम्मते मुहम्मदी से दरयाफ़्त किया जायेगा कि तुम कैसे जानते हो तो वो अ़र्ज़ करेंगे ऐ मेरे रब तूने हमारी तरफ़ अपने रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को भेजा और कुरान पाक नाज़िल फ़रमाया इनके ज़रिये से हम क़तई व यक़ीनी तौर पर जानते हैं कि अम्बिया-ए-किराम (अ़लैहिमुससलाम) ने कामिल तरीक़े से फ़र्ज़े तबलीग़ अदा किया फिर सरवरे अम्बिया (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से आपकी उम्मत के मुताअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त फ़रमाया जायेगा तो नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) उनकी ताईद व तस्दीक़ फ़रमांयेंगे कि ये अपने क़ौल में सच्चे हैं।

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन हज़रत नूह (अ़लैहिस्सलाम) और उनकी-

उम्मत आयेगी तो अल्लाह तआ़ला उम्मते नूह से दरयाफ़्त फ़रमायेगा कि ऐ नूह क्या तुमने अपनी उम्मत को मेरा पैग़ाम पहुँचा दिया था तो हज़रत नूह (अ़लैहिस्सलाम) अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ मेरे रब मैंने उनको तेरा पैग़ाम पहुँचा दिया था फिर रब तआ़ला उनकी उम्मत से दरयाफ़्त फ़रमायेगा क्या इन्होंने तुम्हें मेरा पैग़ाम पहुँचा दिया था तो वो जवाब देंगे कि नहीं हमारे पास तेरा कोई नबी नहीं आया फिर रब तआ़ला नूह (अ़लैहिस्सलाम) से दरयाफ़्त फ़रमायेगा क्या तुम्हारा कोई गवाह है तो हज़रत नूह (अ़लैहिस्सलाम) अ़र्ज़ करेंगे कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) और आपकी उम्मत के लोग मेरे गवाह हैं चुनांचा फिर मेरी उम्मत इस बात की गवाही देगी कि हज़रत नूह (अ़लैहिससलाम) ने अपनी उम्मत को अल्लाह तआ़ला का पैग़ाम पहुँचा दिया था।
(बुख़ारी–सही–3/515-ह०–3339,6/526-ह०–7349)

रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हर एक के दीनी रुतबे व उसके दीन की हक़ीक़त पर मुत्तलाअ़ हैं और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) हर शैः से वाक़िफ़ हैं और लोगों के नेक व बुरे आअ़माल और उनके ईमान की हक़ीक़त व इख़लास और निफ़ाक़ वग़ैराह सब जानते हैं और हर नबी को उनकी उम्मत के आअ़माल पर मुत्तलाअ़ किया जाता है ताकि रोज़े क़यामत गवाही दे सकें और नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम)–

की गवाही तमाम उम्मतों के लिये होगी इसलिये कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) तमाम उम्मतों के अहवाल पर मुत्तलाअ़ हैं और हक़ीक़त ये है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की गवाही क़तई व हतमी है।

इस ज़िमन में मज़कूरा आयात रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के इ़ल्मे उ़मूम पर दलालत करती है क्योंकि ये आयात इस बाब में क़तअ़न नसे सरीह हैं कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) तमाम मुसलमानों हत्ता कि तमाम उम्मतों और अम्बिया के ऊपर शाहिद और गवाह हैं और किसी शैः की शहादत बग़ैर मुशाहदा के मुम्किन व क़ाबिले कुबूल नहीं जब तक कि उस शैः का मुशाहदा न किया हो और बग़ैर इ़ल्म के गवाही जाइज़ नहीं जब आप तमाम उम्मतों के गवाह हैं और तमाम मुसलमानों के गवाह हैं तो ज़रुरी है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को मुसलमानों के आअ़माल व अहवाल का इ़ल्म हो और अगर कुछ रिवायात इसके ख़िलाफ़ हों तो उन रिवायत की तौज़ीह अगर मुम्किन हो तो उनकी तौज़ीह की जायेगी वरना नसे क़तई के मुक़ाबले में उन रिवायात को तर्क किया जायेगा।

➡ अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरे सामने मेरी उम्मत

के अच्छे और बुरे आअ़्माल पेश किये गये मैंने उसके अच्छे आअ़्माल में रास्ते से तकलीफ़ दाह चीज़ हटाने को देखा और उसके बुरे आअ़्माल में बलग़म को पाया जो मस्जिद में होता है और उसे दफ़न नहीं किया जाता।
(मुस्लिम–सही–1/614-ह०–1233)
(इब्ने माजा–सुनन–3/184-ह०–3683)
(इब्ने खुज़ेमा–सही–2/456-ह०–1308)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरी हयात तुम्हारे लिये ख़ैर है क्योंकि बा ज़रिया–ए–वही इलाही व मेरी सुन्नत व तुम्हें नये नये अहकाम मिलते हैं और मेरी वफ़ात भी तुम्हारे लिये ख़ैर है क्योंकि (मेरी क़ब्र में भी) तुम्हारे आअ़्माल मुझ पर पेश हुआ करेंगे चुनांचा अगर (तुम्हारी) नेकियाँ देखूँगा तो अल्लाह तअ़ाला का शुक्र बजा लाऊँगा और बुराईयाँ देखूँगा तो तुम्हारे लिये अल्लाह तअ़ाला से इस्तग़फ़ार किया करूँगा तो मैं जो नेक अ़मल देखता हूँ उस पर अल्लाह तअ़ाला की हम्द करता हूँ और जो मैं बुरा अ़मल देखता हूँ तो उस पर तुम्हारे लिये इस्तिग़फ़ार करता हूँ। (ख़साइसुल कुबरा–2/281)
(मुस्नद–अल बज़्ज़ार–5/308-ह०–1925)
(देलमी–मुस्नद अल फ़िरदौस–1/183-ह०–686)
(अल विदाया वन निहाया–4/257)
(तफ़्सीर–तिबयानुल कुरान–7/817)

तमाम आ़लम पर रसूलुल्लाह का फ़ैज़ान आज भी जारी व सारी है

इरशादे बारी तआ़ाला है :-

और अल्लाह (तआ़ाला) की ये शान नहीं कि उन पर अ़ज़ाब करे जब तक कि ऐ हबीब आप उनमें तशरीफ़ फ़रमां हैं। (सू०-अनफ़ाल-8/33)

नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) तमाम आ़लम के लिये रहमत हैं इसलिये दुनियाँ में अल्लाह तआ़ाला की तरफ़ से ग़ैबी व आसमानी अ़ज़ाब नाज़िल नहीं होते जैसे आसमान से पत्थर बरसना, सूरतें तब्दील हो जाना ज़मीन का उलट जाना असहाबे फ़ील (हाथी वालों यानी लश्करे अबरहा) पर अ़ज़ाब, फ़रिश्ते की चीख़ से सब का हलाक हो जाना बग़ैराह जैसा कि गुज़िश्ता क़ौमो पर मुख़्तलिफ़ अ़ज़ाब मुसल्लत किये गये।

नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के पर्दा फ़रमाने के बाद भी हमारे दरमियान आज भी मौजूद हैं और हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) का फ़ैज़ान आपके विसाले मुबारक के बाद भी बन्द नहीं हुआ अगर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) वाद विसाल मौजूद न होते तो अल्लाह का अ़ज़ाब हम पर ज़रुर मुसल्लत किया

जाता क्योंकि माअ़सियत व गुनाह और शर और अल्लाह व उसके रसूल की अक्सर ना फ़रमानी और क़त्ल व ग़ारत और दहशत गर्दी अपनी इन्तिहाँ को पहुँच चुकी है मगर अल्लाह तआ़ाला का करम और हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की रहमत के सबब आज हम पर गुज़िश्ता क़ौमों की तरह अ़ज़ाब नाज़िल नहीं होता तो माअ़लूम हुआ कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) आज भी हमारे दरमियान मौजूद हैं और उनका फ़ैज़ान आज भी जारी व सारी है

क्योंकि अ़ज़ाबे इलाही का न उतरना ही इस बात की सरीह दलील है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) आज भी ज़िन्दा हैं और क़यामत तक हम सब के दरमियान मौजूद रहेंगें यानी हाज़िर व नाज़िर हैं और हमेशा रहेंगे और नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की रहमत व फ़ैज़ान आपकी हयाते तय्यबा की तरह ता क़यामत जारी व सारी रहेगा।

नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) कुफ़्फ़ारों के लिये भी रहमत हैं जिसके सबब वो सब अमन में हैं तो जब आप सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम की रहमत काफ़िरों पर भी है तो हम सब मुसलमानों पर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की रहमत का आ़लम क्या होगा जिसका मुवाज़ना (अन्दाज़ा) नहीं किया जा सकता

इस आयते करीमा में अल्लाह की रहमत उसके अ़ज़ाब पर सबक़त ले जाने और अल्लाह के ग़ज़ब पर अल्लाह की रहमत ग़ालिब आ जाने का ज़िक्र है कि देखो उन कुफ़्फ़ारों पर अ़ज़ाब आने के तमाम असबाब जमाअ़ थे उनका कुफ़्र व शिर्क और मुसलमानों को ईज़ा देना और उनका शाने इलाही में गुस्ताख़ी व बकवास करना और उनकी सरकशी व हरकतों का तक़ाज़ा ये था कि उन पर अल्लाह तअ़ाला का अ़ज़ाब आ जाये मगर हुज़ूर की रहमत का तक़ाज़ा ये था कि आपकी मौजूदगी में अ़ज़ाबे इलाही न आये और उन सब पर आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की रहमत का ग़लबा हुआ और अ़ज़ाब न आया।

काअ़बा मुअ़ज़्ज़मा सिर्फ़ उसे अमान देता है जो उसमें दाख़िल हो जाये ''वमन दख़ालहु काना आमिना'' यानी जो उसमें दाख़िल हो गया सो वो अमान पा गया (सू०-आले इमरान-97) मगर अमाने मुस्तफ़ा की अमान का अ़ालम ये है कि हर दूर व क़रीब को हर वक़्त अमान देता है ''वमा कानल्लाहु लि युअ़ज़्ज़िबाहुम व अन्ता फ़ीहिम'' यानी अल्लाह की ये शान नहीं कि उन पर अ़ज़ाब करे जब तक कि ऐ हबीब आप उनमें तशरीफ़ फ़रमां हैं (सू०-अनफ़ाल-33) तो माअ़लूम हुआ कि अमाने मुस्तफ़ा की अमान से तमाम मख़लूक़ हर वक़्त फ़ैज़याब होती है और सूफ़िया किराम (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुम) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर हम से नहीं हैं बल्कि हम हुज़ूर से हैं।

और नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हम में हर वक़्त हाज़िर व नाज़िर हैं और हमारे दिल व ईमान और हमारी जान हैं जिस तरह जान जिस्म की मुहाफ़िज़ होती है इसी तरह हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) सारे आ़लम के मुहाफ़िज़ हैं और इन्शा अल्लाह तआ़ाला हुज़ूर के तमाम गुलाम दुन्यावी ज़िन्दगी व क़ब्र व हश्र और पुलसिरात हर जगह अ़ज़ाब से अमान में रहेंगे और हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हर जगह जलवा गर हैं।

जब कुफ़्फ़ारों ने कहा ऐ अल्लाह अगर ये कुरान तेरी तरफ़ से हक़ है तो इसकी नाफ़रमानी के बाइस हम पर आसमान से पत्थर बरसा दे या हम पर कोई दर्दनाक अ़ज़ाब भेज दे मगर हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की मौजूदगी के बाइस रब तआ़ाला ने आसमानी अ़ज़ाब नहीं भेजा जो गुज़िश्ता उम्मतों पर भेजा गया था और ता क़यामत वो अ़ज़ाब नहीं भेजेगा जब तक कि ऐ महबूब आप उनमें जलवा गर हैं और आप जिस्मानी व रुहानी तौर पर आज भी ज़िन्दा और मौजूद हैं और ऐ महबूब ये लोग अपने मुँह से खुद अपनी हलाकत मांग रहे हैं मगर हम इसके बावुजूद इन पर ग़ैबी व आसमानी अ़ज़ाब नाज़िल नहीं फ़रमायेंगे इसलिये कि आप रहमते आ़लम हैं और अगर आपके होते इन पर अ़ज़ाब आ जाये तो फिर आपकी रहमत का ज़हूर कैसे होगा।

कुफ़्फ़ार व मुशिरकीन के कहने के बावुजूद कि हम पर अ़ज़ाब ले आओ मगर अल्लाह तआ़ाला ने फ़रमाया हम उनको अ़ज़ाब नहीं देगे इसकी वजह क्या है वजह ये है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) उनमें तशरीफ़ फ़रमां हैं ये बात वाज़ेह है कि पहली उम्मतों पर पत्थरों की बारिश व बस्तियों को उलटने और सूरतें मस्ख़ करने की शक्ल में जो अ़ज़ाब दिया जाता था मगर उम्मते मुस्तफ़ा क़यामत तक ऐसे अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहेगी इससे साबित हुआ कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ज़िन्दा और मौजूद हैं।

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि अबू जहल ने कहा कि ऐ अल्लाह अगर ये कुरान सच है तो तू अपनी तरफ़ से हम पर आसमान से पत्थर बरसा या दुख का अ़ज़ाब भेज दे तब उस वक़्त ये आयत नाज़िल हुई कि ''अल्लाह की ये शान नहीं उन पर अ़ज़ाब भेजे जबकि आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) उनमें तशरीफ़ फ़रमां हों''। (मुस्लिम–सही–6/359-ह०–7064)

–: दुरुदो सलाम से इस्तिदलाल :–

बेशक अल्लाह और उसके (सब) फ़रिश्ते नबी (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) पर दुरुद भेजते हैं ऐ ईमान वालो तुम (भी) उन पर दुरुद भेजा करो और खूब सलाम भेजा करो।
(सू०–अहज़ाब–33/56)

इस आयते करीमा में सीग़ा ''युसल्लूना'' लाया गया जो हाल व मुस्तक़बिल यानी हमेशगी पर दलालत करता है यानी अल्लाह तआ़ला और उसके फ़रिश्ते हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) पर हमेशा दुरुद भेजते हैं और तमाम मुसलमानों को ये हुक्म दिया गया कि तुम भी आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) पर हमेशा दुरुदो सलाम भेजो यानी क़यामत तक आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) पर दुरुदो सलाम भेजा जायेगा तो माअ़लूम हुआ कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) आज भी अपनी क़ब्र मुबारक में हक़ीक़ी व जिस्मानी व रुहानी ज़िन्दगी के साथ जलवा अफ़रोज़ हैं और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) हर दुरुदो सलाम भेजने वाले को जानते हैं और हर सलाम भेजने वाले के सलाम का जवाब भी देते हैं और जो कोई आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि

वसल्लम) पर दुरुद भेजता है तो उसका दुरुद आप तक पहुँचता है जैसा कि हदीस पाक में हैः–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि कोई भी शख़्स मुझ पर सलाम भेजता है तो बेशक अल्लाह तबारक व तआ़ला ने मुझ पर मेरी रुह लौटा दी हुई है यहाँ तक कि मैं उनके सलाम का जवाब देता हूँ।
(अबू दाऊद–सुनन–2/560-ह०–2041)
(बैहक़ी–सुनन–कुबरा–6/680-ह०–10270)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–2/225-ह०–1581)
(मुस्नद अहमद–2/527-ह०–10827)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तबारक व तआ़ला के बहुत से फ़रिश्ते ऐसे हैं जो हर वक़्त ज़मीन पर फिरते रहते हैं और मेरी उम्मत की तरफ़ से जो सलाम भेजा जाता है वो मुझे पहुँचाते हैं।
(नसाई–सुनन–1/490-ह०–1285)
(दारमी–सुनन–2/495-ह०–2816)
(अ़ब्दुल रज़्ज़ाक़–अल मुसन्निफ़–2/215-ह०–3116)
(बज़्ज़ार–अल मुस्नद–5/307,308-ह०–1924,1925)
(मुस्नद अहमद–1/387,ह०–441,452)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुझ पर दुरुद पढ़ो तुम जहाँ कहीं भी होगे तुम्हारा दुरुदो सलाम मुझ तक पहुँच जायेगा।
(अबू दाऊद–सुनन–2/561-ह०–2042)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–3/389-ह०–4162)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–6/162-ह०–8029)

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जुमआ़ के दिन मुझ पर ज़्यादा से ज़्यादा दुरुद भेजा करो क्योंकि ये योमे मशहूद (हाज़िर होने का) दिन है इस दिन फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं और जब कोई शख़्स मुझ पर दुरुद भेजता है उसके फ़ारिग़ होने तक मेरे सामने उसका दुरुद मुझे पेश किया जाता है अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) कहते है मैंने अ़र्ज़ किया कि आपकी वफ़ात के बाद (क्या होगा) तो आपने फ़रमाया कि मेरी वफ़ात के बाद भी हर दुरुद पढ़ने वाले का दुरुद मुझ पर पेश किया जायेगा फिर आप ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन के लिये अम्बिया किराम के जिस्मों को खाना हराम कर दिया है पस अल्लाह का नबी ज़िन्दा होता है और उसे रिज़्क़ दिया जाता है।
(अबू दाऊद–सुनन–2/204-ह०–1531)
(इब्ने माजा–सुनन–1/554-ह०–1636)
(नसाई–सुनन–1/457-ह०–1377)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया जो शख़्स मुझ पर जुमअ़ा के रोज़ और जुमअ़ा की रात दुरुद पढ़े रब तअ़ाला उसकी सौ हाजतें पूरी करता है सत्तर आख़िरत की व तीस दुनियाँ की फिर अल्लाह तअ़ाला उसके लिये एक फ़रिश्ता मुक़र्रर कर देता है जो कि मेरी क़ब्र में दुरुद इस तरह पेश करता है जिस तरह तुम्हें हद्ये पेश किये जाते हैं वो मुझे उस आदमी का नाम और नसब और उसके खानदान समेत ख़बर देता है पस मैं उसे अपने पास सफ़ेद सहीफ़े में सब्त कर लेता हूँ। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–3/96-ह०–3035)

सलाम व कलाम उससे किया जाता है जो सलाम व कलाम सुनने की इस्तिताअ़त रखता हो और अगर मअ़ाज़ अल्लाह हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) मुर्दा होते तो उन्हें सलाम भेजने का कोई मतलब नहीं बनता जबकि अ़ाम मुसलमान जो फ़ौत हो चुके हैं वो भी अपनी रुहानी ज़िन्दगी के साथ सलाम का जवाब देते हैं चुनांचा हदीस पाक में है

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि आदमी जब ऐसी क़ब्र के पास से गुज़रे जिसे वो जानता हो या न जानता हो और वो उसे सलाम करे तो क़ब्र वाला उसके सलाम का जवाब देता है।
(कंजुल उ़म्माल–8/324-ह०–42993)

अहादीस में वारिद है कि मुर्दे सुनते हैं और मुर्दों की समाअ़त ज़िन्दा इन्सानों से ज़्यादा होती है तो जब अ़ाम मुर्दों की समाअ़त का ये अ़ालम है तो इमामुल अम्बिया रहमते दो अ़ालम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की समाअ़त का अ़ालम क्या होगा जिनके कान मुबारक दूर व नज़दीक से यकसां सुनते हैं।

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि हम हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) के हमराह थे आपने हमें अहले बदर के मुताअ़ल्लिक़ हदीस बयान फ़रमाई पस फ़रमाया कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने हमें कुफ़्फ़ार के साथ लड़ाई शुरु होने से पहले रोज़ क़त्ल होने वाले कुफ़्फ़ार की जाए हलाकत दिखा रहे थे आप फ़रमाते जाते थे कि इंशा अल्लाह अ़ज़्ज़ा व जल कल ये फुलाँ काफ़िर का मक़्तल होगा और ये फुलाँ के क़त्ल होने की जगह है हज़रत उ़मर फ़रमाते हैं उस ज़ात की क़सम जिसने आप को हक़ के साथ मबऊस फ़रमाया उन कुफ़्फ़ारों के मुताअ़ल्लिक़ जो जगह आप ने मुतय्यन फ़रमाई थी वो उन हुदूद से ज़र्रा भर भी इधर उधर न गिरे फिर उनको एक दूसरे के ऊपर बदर के कुऐं में डाल दिया गया तो रसूले खुदा (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) चले हत्ता कि उनके पास पहुँच गये और फ़रमाया ऐ फुलाँ इब्ने फुलाँ क्या तुमने उस वाअ़दे को पा लिया जो अल्लाह ने और उसके-

रसूल ने तुम्हारे साथ किया था तहक़ीक़ मैंने उस वाअ़दे को हक़ पाया जो अल्लाह तआ़ला ने मेरे साथ किया फिर हज़रत ऊ़मर ने हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम से अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह आप इनके अजसाम (मुर्दा जिस्मों) के साथ कैसे कलाम फ़रमां रहे हैं जिनमें रुह नहीं है फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है कि मैं जो कुछ भी कह रहा हूँ तुम इन मुर्दा कुफ़्फ़ारों से ज़्यादा नहीं सुन रहे मगर ये कि वो जवाब देने की कुदरत नहीं रखते फिर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के हुक्म के तहत उन मुर्दा कुफ़्फ़ारों को घसीट कर एक गढ्ढे में डाल दिया गया।

(मुस्लिम–सही–6/403-ह०–7222)
(नसाई–सुनन–1/671-ह०–2078)
(अबू दाऊद–सुनन–3/172-ह०–2681)
(इब्ने हिब्बान–सही–7/501-ह०–6498)

हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस मय्यत को उसकी चारपाई पर रखकर तीन क़दम चलाया जाता है तो वो ऐसी आवाज़ से बोलती है जिसे हर वो चीज़ सुनती है जिसे रब तआ़ला सुनाना चाहता है ऐ लोगो दुनियाँ तुम्हें धोका न दे जैसा उसने मुझे दिया है और न ज़माना तुमसे खेले जैसे उसने मुझसे खेला है और मैं अपना सब कुछ जिनके लिये छोड़े जा रहा हूँ वो मेरे गुनाह नहीं उठाएंगे

और आज तुम लोग मेरे साथ चल रहे हो और अ़न्क़रीब मुझे छोड़ दोगे और अल्लाह तबारक व तआ़ला मेरा हिसाब लेगा।
(कंज़ुल उ़म्माल–8/256-ह०–42357)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बन्दे को जब उसकी क़ब्र में रखा जाता है और उसके साथी जब वापस लौटते हैं तो मुर्दा उनके जूतों की आवाज़ को सुन रहा होता है।
(बुख़ारी–सही–2/128-ह०–1374)
(मुस्लिम–सही–4/2200-ह०–2870)
(अबू दाऊद–सुनन–6/605-ह०–4752)
(नसाई–सुनन–3/664-ह०–2053)
(अहमद बिन हम्बल–अल मुस्नद–3/126-12293)
(मुस्लिम–सही–6/401-ह०–7216)
(कंज़ुल उ़म्माल–8/258-ह०–42379)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/760-ह०–1404)

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया जब मोमिन मय्यत को क़ब्र में दाख़िल किया जाता है तो उसे ऐसा नज़र आता जैसे सूरज डूबने के क़रीब हो फिर वो बैठता है और अपनी दोनों आँखों को मलते हुये कहता है कि मुझे छोड़ दो और नमाज़ पढ़ने दो। (इब्ने माजा–सुनन–3/394-ह०–4272)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि ईदैन, आशूरा व शअ़बान की रात व जुमअ़ा के रोज़ और रजब की पहली जुमेरात को रुहें अपने घरों के दरवाज़ों पर खड़ी होकर कहती हैं कि इस रात में हम पर रहम करो और सद्क़ा या मुफ़लिस व मोहताज को खाना देकर हमें ईसाले सवाब करो और अगर तुम इसकी ताक़त नहीं रखते तो इस शबे मुबारक में दो रकअ़त नमाज़ (ईसाले सवाब) से हमें याद करो क्या कोई है जो हमें याद करे क्या कोई है जो हम पर रहम करे हमारे आअ़माल नामे लपेटे जा चुके हैं और तुम्हारे आअ़माल नामे अभी खुले हुये हैं और अब हम तुम्हारे मोहताज हैं इसलिये दुअ़ा के वक़्त हमें न भूलो और जब फ़ौत शुदा लोग अपने घर वालों से सद्क़ा या दुअ़ा लेते हैं तो वो ख़ुशी व मसर्रत से वापस लौटते हैं और अगर कुछ न पायें तो महरुम और ग़म ज़दा व ना उ़म्मीद होकर वापस लौटते हैं।
(कुर्रातुल अबसार–123)

➡ हज़रत दाऊद बिन अबी सालेह (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है फ़रमाते हैं कि एक रोज़ (खलीफ़ा–ए–वक़्त) मर्वान रोज़ा–ए–रसूल पर आया तो उसने देखा कि एक शख़्स नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह व आलिहि वसल्लम) की क़ब्रे अनवर पर अपना चेहरा झुकाये खड़ा हुआ है तो मर्वान ने उस शख़्स से कहा क्या तू जानता है कि तू क्या कर रहा है जब मर्वान उस

शख़्स की तरफ़ बढ़ा तो देखा कि वो सहाबी-ए-रसूल हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) थे तो उन्होंने जवाब में कहा हाँ मैं जानता हूँ कि मैं रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की बारगाहे अक़्दस में हाज़िर हुआ हूँ किसी पत्थर के पास नहीं आया हूँ।
(हाकिम-अल मुस्तदरक-6/674-ह०-8571)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम्हारे आअ़माल तुम्हारे फ़ौत शुदा घर वालों पर पेश किये जाते हैं और जब वो नेकियाँ देखते हैं तो वो खुश होते हैं और जब कोई बुराई देखते हैं तो उसे नापंसद करते हैं और जब कोई नई मय्यत क़ब्र में आती है तो वो उससे अपने घर वालों का हाल पूछते हैं यहाँ तक कि मुर्दा अपनी बीबी के मुताअ़ल्लिक़ पूछता है और कोई शख़्स किसी ऐसे शख़्स के मुताअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त करता है जो फ़ौत हो चुका हो तो वो कहते हैं कि मेरे पास नहीं आया पस अफ़सोस उसे उसके ठिकाने जहन्नुम के तरफ़ ले जाया गया। (कंज़ुल उ़म्माल-8/321-ह०-42979)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब मय्यत को क़ब्र में रखा जाता है और उसके साथी उसको दफ़न करके लौटते हैं तो वो उनके जूतियों की-

आवाज़ सुनता है पस उसके पास दो फ़रिश्ते आते हैं और उसे उठा देते हैं (पस उससे सवाल करते हैं वो उनके जवाबात देता है)
(मुस्लिम–सही–6/401-ह०–7216)
(नसाई–सुनन–1/664-ह०–2054)
(बुख़ारी–सही–2/106-ह०–1338)
(बुख़ारी–सही–2/128-ह०–1374)
(अबू दाऊद–सुनन–3/581-ह०–3231)

इस रिवायत में फ़रिश्तो के सवालात पूछने का बयान है और वो उन सवालात के जवाबात देता है तो ज़ाहिर है कि वो सुनता तो फिर उसके बाद ही जवाबात देता है या इनकार करता है।

इसी तरह दौराने नमाज़ हालते तशहुद में हुक्मे इलाही है कि ऐ बन्दो पढ़ो अस्सलामु अ़लैका अइयुहन्नबी तो इस कलमे में लफ्ज़े अ़लैका में ज़मीरे वाहिद हाज़िर है जो कि मुख़ातिब के लिये इस्तेअ़माल की जाती है यानी जो हाज़िर हो और ग़ायब न हो तो ये नबी करीम हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के ज़िन्दा व हाज़िर होने की सरीह दलील है अल्लाह तबारक व तआ़ला ने उन एतराज़ात की नफ़ी कर दी जो मआ़ज़ अल्लाह हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को बाद वफ़ात मुर्दा व ग़ायब गुमान करते हैं।

इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का मौत के बाअ़द हयात का मुशाहदा करना

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और वो वाक़िआ़ भी याद करें जब इब्राहीम ने अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे रब मुझे दिखा दे कि तू मुर्दों को किस तरह ज़िन्दा फ़रमाता है इरशाद हुआ क्या तुम यक़ीन नहीं रखते उसने अ़र्ज़ किया क्यों नहीं (यक़ीन रखता हूँ) लेकिन चाहता हूँ कि मेरे दिल को भी खूब इत्मीनान (व क़रार) हासिल हो जाये इरशाद फ़रमाया सो तुम चार परिन्दों को पकड़ लो फिर उन्हें अपनी तरफ़ मानूस कर लो फिर (उन्हें ज़िब्हा करके) उनका एक एक टुकड़ा एक एक पहाड़ पर रख दो फिर उन्हें बुलाओ तो वो तुम्हारे पास दौड़ते हुये आ जायेंगे।
(सू०-बक़राह-2/260)

चुनांचा हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) ने चार परिन्दे लिये और उन्हें ज़िब्हा किया और उनके पर उखाड़े और उनका कीमा करके उनके अजज़ा बाहम मिला दिये और इस मजमुआ़ के कई हिस्से करके एक एक हिस्सा एक एक पहाड़ पर रख दिया और सबके सर अपने पास महफ़ूज़ रख लिये फिर उन परिन्दों को आवाज़ देकर अपने पास बुलाया तो आप (अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम) के बुलाते ही हुक्मे इलाही से वो तमाम अजज़ा उड़े-

व हर परिन्दे के अजज़ा अ़लैहदा अ़लैहदा होकर अपनी तरतीब से जमाअ़ हुये और परिन्दों की शक्लें बनकर अपने पाँव से दौड़ते हुये इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हो गये और अपने सरों से मिलकर पहले की तरह मुकम्मल हो गये तो इस आयते करीमा से साबित हुआ कि अगर मुर्दा परिन्दों का सुनना नामुम्किन होता तो अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने ख़लील हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) को ऐसा हुक्म ही न देता फिर उन परिन्दों का आवाज़ सुन कर ज़िन्दा हो जाना इस बात की दलील है कि मुर्दे सुनते हैं।

गुज़िश्ता अम्बिया किराम से सवालात करने से इस्तिदलाल

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और जो रसूल हमने आप से पहले भेजे आप उनसे पूछिये कि क्या हमने (खुदाये) रहमान के सिवा कोई और माअ़बूद बनाये थे कि उनकी परिशतिश की जाये। (सू०–जुख़रुफ़–43/45)

अल्लाह तआ़ला का नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से ये फ़रमाना कि जो रसूल हमने आप से पहले भेजे आप उनसे पूछिये कि क्या हमने खुदाये रहमान के सिवा कोई और माअ़बूद बनाये थे ये इस बात की सरीह दलील है कि साबिक़ा रसूल भी ज़िन्दा हैं वरना बेजान से पूछने का कोई मतलब ही नहीं बनता।

हज़रत सालेह व हज़रत शुऐब का मुर्दों का ख़िताब

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

पस उन्होने उँटनी को (काट कर) मार डाला और अपने रब के हुक्म से सरकशी की और वो कहने लगे कि ऐ सालेह तुम वो अ़ज़ाब हमारे पास ले आओ जिसकी तुम हमें वईद सुनाते थे अगर तुम (वाक़ई) रसूलों में से हो सो उन्हें सख़्त ज़लज़ले (के अज़ाब) ने आ पकड़ा पस वो (हलाक होकर) सुबह अपने घरों में औंधे पड़े रह गये और फिर (सालेह अ़लैहिस्सलाम ने) उनसे मुँह फेर लिया और कहा ऐ मेरी क़ौम बेशक मैंने तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुँचा दिया था और नसीहत (भी) कर दी थी लेकिन तुम नसीहत करने वालों को पसंद (ही) नहीं करते।

(सू०–आअ़राफ़–7/77-79)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और उनकी (यानी शुऐब अ़लैहिस्सलाम की) क़ौम के सरदारों और रईसों ने जो कुफ़्र (व इन्कार) के मुरतकिब हो रहे थे कहा (ऐ लोगों) अगर तुम ने शुऐब (अ़लैहिस्सलाम) की पैरवी की तो तुम नुकसान उठाने वाले हो जाओगे पस उन्हें शदीद ज़लज़ले (के अ़ज़ाब) ने आ पकड़ा सो वो (हलाक होकर) सुबह अपने घरों में औंधे पड़े रह गये जिन लोगों ने शुऐब (अ़लैहिस्सलाम) को झुठलाया

(वो ऐसे नेस्त व नाबूद हुये कि) गोया वो उस बस्ती में कभी बसे ही न थे जिन लोगों ने शुऐब (अ़लैहिस्सलाम) को झुठलाया (हक़ीक़त में) वो लोग ही नुकसान उठाने वाले हो गये तब (शुऐब अ़लैहिस्सलाम) उनसे किनारा कश हो गये और कहने लगे ऐ मेरी क़ौम बेशक मैंने तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहुँचा दिये थे और मैंने तुम्हें नसीहत भी कर दी थी फिर मैं काफ़िर क़ौम (के तबाह होने) पर अफ़सोस क्यों कर करूँ।
(सू०–आअ़राफ़–7/90,93)

मज़कूरा आयाते करीमा से ये बात साबित हुई कि मुर्दे सुनते हैं कि हज़रत सालेह व शुऐब (अ़लैहिमस्सलाम) ने अपनी क़ौम की हलाकत के बाद उनसे ख़िताब फ़रमाया जिससे साबित होता है कि मुर्दे सुनते हैं।

रसूलुल्लाह के तवस्सुल से मग़फ़िरत

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और अगर वो लोग जिस वक़्त उन्होंने अपने ऊपर जुल्म किया तो आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो जाते और अल्लाह तआ़ला से मुआ़फ़ी माँगते और रसूल भी उनके लिये मग़फ़िरत तलब करते तो वो (इस वसीले और शफ़ाअ़त की बिना पर) अल्लाह को ज़रुर तौबा फ़रमाने वाला मेहरबान पाते। (सू०-निसा-4/64)

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने गुनाहगारों के लिये एक बेहतरीन व ऊ़म्दाह तरीक़ा ज़िक्र फ़रमाया कि वो बारगाहे मुस्तफ़ा में हाज़िर हो जायें और अल्लाह तआ़ला से अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी तलब करें और रसूल भी उनके लिये मग़फ़िरत तलब करें तो वो (इस वसीले और शफ़ाअ़त की बिना पर) अल्लाह को ज़रुर तौबा फ़रमाने वाला मेहरबान पायेंगे और इस आयत में रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ज़ाहिरी हयाते तय्यबा और बाअ़द विसाल की कोई क़ैद नहीं है अगर (मआ़ज़ अल्लाह) हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) अपनी क़ब्रे अनवर में महज़ बेजान हैं तो अल्लाह तबारक व तआ़ला इस आयते करीमा को सिर्फ़ ज़ाहिरी हयाते तय्यबा तक महदूद फ़रमाता और सहाबा किराम भी ज़ाहिरी हयाते तय्यबा तक ही महदूद-

समझते लेकिन बाअ़्द अज़ विसाल सहाबा किराम रोज़ा-ए-अत्हर की हाज़िरी को मुस्तहसन समझा करते थे जिससे माअ़लूम हुआ कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) अपनी क़ब्रे अनवर में ज़िन्दा हैं।

तो माअ़लूम हुआ कि नबी करीम सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम की ज़ाहिरी हयाते तय्यबा में आपकी बारगाह में हाज़िर होकर आपके वसीले से अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी तलब करने से रब तअ़ाला ज़रुर मग़फ़िरत फ़रमाता और रहमतों का नुज़ूल फ़रमाता है और आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के ज़ाहिरी विसाल के बाद भी आपके मज़ारे अक़्दस पर हाज़िरी देकर या ये भी मुयस्सर न हो तो जहाँ कहीं भी हो सिद्क़ व ख़ालिस दिल से हुज़ूर की तरफ़ ख़ालिस तवज्जौ व तवस्सुल से गुनाहों से मुआ़फ़ी की फ़रियाद करने से रब तअ़ाला ज़रुर मग़फ़िरत फ़रमाता है और साथ ही साथ रहमतों का नुज़ूल फ़रमाता है क्योंकि अल्लाह तबारक व तअ़ाला ने ये वाअ़दा फ़रमाया है कि जो लोग मेरे महबूब की बारगाह में अपने गुनाहों के साथ हाज़िर हों और अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी के तालिब हों और मेरे हबीब भी उनकी सिफ़ारिश करें तो वो मुझे ज़रुर तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान पायेंगे।

आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के ज़ाहिरी हयाते मुबारका और विसाले ज़ाहिरी के

बाद आपके मज़ारे पुर अनवर पर हाज़िरी देकर अपने गुनाहों की मुआफ़ी तलब करने व मग़फ़िरत और हाजात व मुश्किलात से निजात की इल्तिजा करने का सिलसिला सहाबा किराम (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अन्हुम) से चलता आ रहा है इस ज़िमन में चन्द अहादीस मुलाहिज़ा फ़रमायें :–

➡ अबू हर्ब (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) बयान करते हैं कि एक एअ़राबी ने फ़रीज़ा–ए–हज अदा किया फिर वो मस्जिदे नबवी में हाज़िर हुआ और हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) की क़ब्रे अनवर के पास आया और नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के क़दमैन मुबारक की जानिब खड़ा हुआ और अ़र्ज़ किया अस्सलामु अ़लैका या रसूलल्लाह फिर हज़रत अबू बक्र और हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) की ख़िदमत में सलाम अ़र्ज़ किया फिर हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) की जानिब खड़ा हुआ और अ़र्ज़ करने लगा कि या रसूलल्लाह मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान हों मैं गुनाहों व ख़ताओं से लदा हुआ हूँ और आपकी बारगाहे अक़दस में हाज़िर हुआ ताकि आपके रब की बारगाह में आपको अपनी बख़्शिश का वसीला बना सकूँ क्योंकि अल्लाह तबारक व तअ़ाला ने अपनी किताब कुरान मजीद में फ़रमाया–

‘‘(ऐ हबीब) अगर वो लोग जब अपनी जानों पर जुल्म कर बैठें और आपकी ख़िदमत में हाज़िर

हो जायें और अल्लाह से मुआ़फ़ी तलब करें और अल्लाह के रसूल भी उनके लिये मग़फ़िरत तलब करें तो वो (इस वसीले व शफ़ाअ़त की बिना पर) अल्लाह तआ़ला को ज़रूर बहुत तौबा कुबूल करने वाला निहायत मेहरबान पायेगा''-

या रसूलल्लाह मैं आपके रब के हुजूर आपको वसीला बनाता हूँ और ये अ़र्ज़ करता हूँ कि आप (अपने रब की बारगाह में) मेरे हक़ में सिफ़ारिश फ़रमायें।

(बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-3/393-ह०-4178)
(इब्ने कसीर-तफ़्सीरुल कुरानुल अ़ज़ीम-1/521)
(सयूती-दुर्रे मन्सूर-1/580)

➡ हज़रत मालिक (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) जो कि हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के शुअ़बा तुआ़म में ख़जान्ची थे फ़रमाते हैं कि हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के दौरे ख़िलाफ़त में लोग कह्त साली में मुब्तिला हो गये पस एक शख़्स नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की क़ब्रे अनवर पर हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह अपनी उम्मत के लिये पानी की दुआ़ फ़रमायें वो कह्त से हलाक हो रही है तो उस शख़्स को हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ख़्वाव में नज़र आये और उससे कहा कि तुम हज़रत उ़मर के पास जाकर मेरा सलाम कहो और उन्हें बशारत दो कि अ़नक़रीब बारिश होगी और ये भी कहो कि तुम

पर दानिश मन्दी लाज़िम है तुम पर दानिश मन्दी लाज़िम है तो वो शख़्स हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) की ख़िदमत मे हाज़िर हुआ और उन्हें अपने ख़्वाव की ख़बर दी तो हज़रत उ़मर रोने लगे फिर फ़रमाया कि ऐ मेरे रब मैं कौताही नहीं करता मगर उस चीज़ में जिस में मैं आ़जिज़ हूँ। (मुसन्निफ़ इब्ने अबी शैबा–9/479-ह०–32665)

➡ हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के विसाल मुबारक के बाद एक ऐअ़राबी आप के रोज़ा–ए–अक़दस पर हाज़िर हुआ और रोज़ा–ए–अनवर की ख़ाक अपने सर पर डाली और अ़र्ज़ करने लगा या रसूलल्लाह आपने जो फ़रमाया हमने सुना और जो आप पर नाज़िल हुआ उसमें ये आयत भी है ''वो लोग जब अपनी जानों पर जुल्म कर बैठे थे आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो जाते और अल्लाह से मुआ़फ़ी माँगते और रसूल भी उनके लिये मग़फ़िरत तलब करते तो वो (इस वसीले और शफ़ाअ़त की बिना पर) अल्लाह को ज़रुर तौबा कुबूल करने वाला निहायत मेहरबान पाते'' तो बेशक मैंने अपने ऊपर जुल्म किया है और अल्लाह से अपने गुनाहो की बख़्शिश की ख़ातिर आप की बारगाह में हाज़िर हुआ हूँ आप मेरी मग़फ़िरत के लिये अल्लाह तआ़ला से दुआ़ फ़रमादें इस पर क़ब्रे अनवर से निदा आयी कि तुझे बख़्श दिया गया। (तफ़्सीर–मदारिक–2/628)

तमाम शुहदा ज़िन्दा हैं

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जायें उन्हें मुर्दा मत कहा करो बल्कि वो ज़िन्दा हैं लेकिन तुम्हें (उनकी ज़िन्दगी का) शऊ़र नहीं है।
(सू०–बक़राह–2/154)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

और जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल किये जायें उन्हें हरगिज़ मुर्दा ख़्याल (भी) न करना बल्कि वो अपने रब के हुज़ूर ज़िन्दा हैं (और) उन्हें (जन्नत की नेअ़मतों का) रिज़्क़ दिया जाता है। (सू०–आले इमरान–3/169)

मज़कूरा आयाते करीमा शुहदा की हयात पर दलालत करती हैं और तमाम अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) के दरजात व मरातिब तमाम शुहदा से निहायत बुलन्द हैं तो ज़ाहिर है कि अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) की हयात तमाम शुहदा से आअ़ला हयात होगी और नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की शानो अ़ज़मत व क़दरो मन्ज़िलत और दरजात व मरातिब तमाम अम्बिया से अफ़ज़ल व बुलन्द व बाला हैं तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की बाद वफ़ात आपकी हयाते तय्यबा का अ़ालम क्या होगा।

शबे मेअ़राज हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) की अम्बिया किराम से मुलाक़ात

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

वो ज़ात (हर ऐ़ब व नक़्स व कमज़ोरी से) पाक है जो रात के थोड़े से हिस्से में अपने (महबूब व मुक़र्रब) बन्दे को मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़सा तक ले गई। (सू०-बनी इसराईल-17/1)

हर ऐ़ब से पाक है वो ज़ात जो अपने मुक़र्रब बन्दे को रात के एक क़लील वक़्फ़े में मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़सा तक ले गयी जिसके इर्द गिर्द को उसने बरकतें दी ताकि वो पाक ज़ात अपने महबूबे मुकर्रम को अपनी बाअ़ज़ निशानियाँ दिखाये अल्लाह तआ़ला ने अपने महबूब हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को बुर्राक पर सवार कराया और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने मस्जिदे अक़सा में अम्बिया व रुसुल को नमाज़ पढ़ाई और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने इमामत फ़रमाई और अम्बिया ने इक़्तिदा की बाअ़ज़ लोग कहते हैं कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की रुह को मेअ़राज कराई गई थी और ये जिस्मानी मेअ़राज नहीं थी ऐसे अक़वाल महज़ बातिल और बेदलील हैं जबकि हक़ीक़त ये है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को हालते बेदारी में जिस्मानी मेअ़राज कराई गई क्योंकि-

अगर आपकी मेअ़राज सिर्फ़ रुहानी होती तो इसकी हक़ीक़त का मुन्किरीन इन्कार न करते और अगर ये सिर्फ़ ख़्वाब का वाक़्आ़ होता तो मुश्किरीन इसका रद्द न करते क्योंकि ख़्वाब में किसी भी अ़जीब चीज़ को देखने पर किसी को हैरत नहीं होती और न कोई इसका इन्कार करता और अल्लाह तआ़ला ने ये फ़रमाया 'असरा बि अ़ब्दिही' ये नहीं फरमाया 'असरा बिरुही अ़ब्दिही' और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) का बुर्राक पर सवार होना भी इस बात का तक़ाज़ा करता है कि ये जिस्मानी मेअ़राज थी क्योंकि किसी सवारी पर सवार होना जिस्म का तक़ाज़ा है न कि रुह का।

बेअ़सते नबवी के (12) बारहवें साल नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की उ़म्र शरीफ़ 51 साल हो चुकी थी कि रब तआ़ला ने अपने महबूब को मोअ़जिज़ाह-ए-मेअ़राज अ़ता फ़रमाया और रजबुल मुरज्जब की 27वीं तारीख़ को अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब को अपने क़रीब बुलवा लिया इस रात में मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़सा तक और सातों आसमान और जन्नत की सैर कराई और रब तआ़ला ने अपने अनवारे तजल्लियात के मुशाहदात कराये और अपने दीदार और हम कलामी से अपने हबीब को सर बुलन्द फ़रमाया।

-: वाक्अ़ा शबे मेअ़राज :-

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि शबे मेअ़राज से क़ब्ल मैं नींद और जागने की कैफ़ियत में था कि एक फ़रिश्ता आया और एक सोने का तश्त लाया गया फिर मेरा सीना चाक किया गया और मेरा दिल ज़मज़म के पानी से धोया गया उसके बाद मेरा सीना हिकमत और ईमान से भर दिया गया फिर मैं जिबराईल (अ़लैहिस्सलाम) के साथ र'वाना हो गया।
(नसाई–सुनन–1/150-ह०–451)
(बुख़ारी–सही–4/117-ह०–3887)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरे पास बुर्राक़ लाया गया जो इंतिहाई सफेद रंग व लम्बे क़द वाला चौपाया था उसका क़दम नज़र की इंतिहा पर पड़ता था मैं उस पर सवार होकर बैतुल मुक़द्दस तक पहुँचा और उस बुर्राक़ को उस जगह बाँध दिया जिस जगह और पैग़म्बर अपने अपने जानवरों को बाँधा करते थे फिर मैं उस मस्जिद में दाख़िल हुआ और दो रकअ़त नमाज़ अदा की।
(मुस्लिम–सही–1/268-ह०–411)

जब आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) बैतुल मुक़द्दस तशरीफ़ ले आये तो यहाँ एक जमाअ़त पहले से तशरीफ़ फ़रमां थी तो जब उस जमाअ़त ने नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम को देखा तो कहा खुश आमदीद ऐ नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) उस जमाअ़त में एक बुजुर्ग थे तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने पूछा ऐ जिबराईल ये कौन है तो जिबराईल अ़लैहिस्सलाम ने अ़र्ज़ किया ये आपके बाप हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) हैं फिर आपने पूछा ये कौन हैं अ़र्ज़ की ये हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) हैं फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने पूछा ये कौन हैं अ़र्ज़ की ये हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) हैं फिर नमाज़ के लिये इक़ामत कही गई और इमामत के लिये आगे करने के मुताअ़ल्लिक़ गुफ़्तगू होने लगीं यहाँ तक कि सब ने नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को आगे किया।

फिर आपके सामने मशरुबात लाये गये तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने दूध को पसंद फ़रमाया फिर जिबराईल (अ़लैहिस्सलाम) ने अ़र्ज़ किया कि आप मेरे साथ अपने रब के पास जाने के लिये उठें तो फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) खड़े हो गये और फिर आप आसमानों की तरफ़ तशरीफ़ ले गये फिर वहाँ से अ़र्श व ला मकां पर तशरीफ़ ले गये। (तबरानी–मुअ़जम औसत–3/162-3879)

नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं कि फिर मुझे आसमान की तरफ़ ले जाया गया और वहाँ मेरी मुलाक़ात हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) से हुई और मैंने उनको सलाम किया उन्होंने सलाम का जवाब देते हुये मुझे खुश आमदीद और मरहबा कहा और दुआ़ दी फिर इसी तरह मुझे दूसरे आसमान पर ले जाया गया जहाँ मेरी मुलाक़ात हज़रत ईसा व हज़रत याह्या (अ़लैहिमस्सलाम) से हुई और मैंने उनको सलाम किया उन्होंने सलाम का जवाब देते हुये मुझे खुश आमदीद और मरहबा कहा और दुआ़ दी फिर हमें तीसरे आसमान पर ले जाया गया जहाँ मेरी मुलाक़ात हज़रत युसूफ़ (अ़लैहिस्सलाम) से हुई मैंने उनको सलाम किया और उन्होंने सलाम का जवाब देते हुये मुझे खुश आमदीद और मरहबा कहा और दुआ़ दी।

फिर मुझे चौथे आसमान पर ले जाया गया जहाँ मेरी मुलाक़ात हज़रत इदरीस (अ़लैहिस्सलाम) से हुई मैंने उनको सलाम किया उन्होंने सलाम का जवाब देते हुये मुझे खुश आमदीद और मरहबा कहा और दुआ़ दी फिर मुझे पाँचवे आसमान पर ले जाया गया वहाँ मेरी मुलाक़ात हज़रत हारुन (अ़लैहिस्सलाम) से हुई मैंने उनको सलाम किया और उन्होंने सलाम का जवाब देते हुये मुझे खुश आमदीद और मरहबा कहा और दुआ़ दी फिर मुझे छटे आसमान पर ले जाया गया जहाँ मेरी मुलाक़ात हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) से हुई मैंने

उनको सलाम किया और उन्होंने सलाम का जवाब देते हुये मुझे खुश आमदीद और मरहबा कहा और दुआ़ दी फिर मुझे सॉतवे आसमान पर ले जाया गया जहाँ पर मेरी मुलाक़ात हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) से हुई जो बैतुल माअ़मूर से टेक लगाये हुये थे और उस बैतुल माअ़मूर में हर रोज़ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते जाते हैं और जो एक बार हो आये उसको दोबारा मौक़ाअ़ नहीं मिलता।

➡ आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) को सलाम किया उन्होंने सलाम का जवाब दिया और आपको खुश आमदीद कहते हुये कहा मरहबा सालेह बेटे और सालेह नबी को खुश आमदीद फिर आप सिदरतुल मुन्तहां के पास तशरीफ़ लाये (यह एक नूरानी बेरी का दरख़्त है जिसकी जड़ें छटे आसमान पर और शाखें सॉतवें आसमान के ऊपर हैं इसके फल बड़े बड़े और पत्ते हाथी के कानों की तरह हैं) जिराईल (अ़लैहिस्सलाम) ने अ़र्ज़ किया कि ये सिदरतुल मुन्तहां है यहाँ आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने चार नहरें मुलाहिज़ा फ़रमाईं जो सिदरतुल मुन्तहां से निकलती हैं।
(बुख़ारी–सही–1/285-ह०–349)
(मुस्लिम–सही–1/268-ह०–411)
(नसाई–सुनन–1/150-ह०–451)
(बुख़ारी–सही–4/117-ह०–3887)
(बुख़ारी–सही–3/452-ह०–3207)

जब रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) सिदरतुल मुन्तहां से आगे बढ़े तो हज़रत जिबराईल (अ़लैहिस्सलाम) वहीं ठहर गये और आगे जाने से माअ़ज़रत ख़्वाह हुये।

इरशादे बारी तआ़ाला हैः-

और वो (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) शबे मेअ़राज) सबसे ऊँचे किनारे पर थे फिर वो (रब्बुल इ़ज़्ज़त अपने हबीब से) क़रीब हुआ फिर और ज़्यादा क़रीब हो गया फिर (जलवा-ए-हक़ और हबीबे मुकर्रम में सिर्फ़) दो कमानों की मिक़दार फ़ासला रह गया या उससे भी कम पस (उस ख़ास मक़ामे कुर्ब पर) उस (अल्लाह) ने अपने अ़ब्दे (महबूब) की तरफ़ वही फ़रमाई जो (भी) वही फ़रमाई (उनके) दिल ने उसके ख़िलाफ़ न जाना जो उनकी आँखों ने देखा क्या तुम उनसे इस बात पर झगड़ते हो कि जो उन्होंने देखा और बेशक उन्होंने तो (जलवा-ए-हक़) को दूसरी मर्तबा (फिर) देखा (और तुम एक बार के देखने पर ही झगड़ रहे हो) (सू०-नज्म-53-7-13)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः-

उनकी आँख न किसी और तरफ़ माईल हुई और न हद से आगे बढ़ी (जिसको तकना था उस पर जमी रही) (सू०-नज्म-53/17)

अल्लाह तबारक व तआ़ाला ने अपने महबूब को वो कुर्बे ख़ास अ़ता फ़रमाया जो न किसी को-

मिला है और न किसी को मिलेगा और मेअ़राज शरीफ़ आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) का अ़ज़ीम मोअ़जिज़ाह और अल्लाह तबारक व तआ़ला की अ़ज़ीम नेअ़मत है और इससे हुजूर पुर नूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) का कमाले कुर्ब ज़ाहिर होता है जो मख़्लूक़े इलाही में से किसी को मुयस्सर नहीं हुआ और हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने जिस्म व रुह दोंनो के साथ हालते बेदारी में अपनी नूरानी आँखों से अपने रब और उसके नूर का ज़ाहिरी दीदार फ़रमाया और ये वो मक़ामे सर बुलन्दी था कि वहाँ न कोई पर्दा हाइल था न ज़माना था न मकान था और वहाँ न कोई फ़रिश्ता था और न कोई इन्सान था और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) अपने रब से हम कलाम भी हुये और अपने रब के दीदार से मुशर्रफ़ भी हुये।

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि शबे मेअ़राज अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने महबूब से इतना क़रीब हुआ कि दो कमानों की मिक़दार फ़ासला रह गया।
(बुख़ारी–सही–6/631-ह०–7517)

अ़र्श के मक़ामे ‘दना’ तक सत्तर हज़ार पर्दे प्यारे आक़ा मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने तैः फ़रमाये और हर पर्दे का फ़ासला ज़मीन व आसमान के फ़ासले के बराबर है इतना दराज़ फ़ासला और रब फ़रमाये ‘‘असरा’’ आज

तो मेरे महबूब की सैर व तफ़रीह है किसकी अब मजाल जो ताक़ते महबूब का मुक़ाबला कर सके जिसके आगे जाने से जिबराईल (अ़लैहिस्सलाम) के पर जलते हैं मगर ये मेअ़राजे मुस्तफ़ा है कि रब तआ़ला ने फ़रमाया ऐ मेरे हबीब आज मुहिब और महबूब की मुलाक़ात का दिन है आज आपके चलने व चढ़ने की ताक़त ''सुब्हानल्लज़ी असरा बिअ़ब्दिही'' पाक है वो ज़ात जो अपने बन्दे को ले गई और आपके जिस्म की ताक़त ''वन्नज्मि इज़ा हवा'' क़सम है रोशन सितारे (मुहम्मद) की जब वो (शबे मेअ़राज ऊपर जाकर) नीचे उतरे और आपके बोलने और जुबान की ताक़त ''मा यन्तिक़ू अ़निल हवा'' यानी वो अपनी ख़्वाहिश से कलाम नहीं करते और आपकी आँखों की ताक़त ''मा ज़ाग़ल बसरु वमा तग़ा'' यानी उनकी आँख न किसी और तरफ़ फिरी और न हद से बढ़ी बल्कि जिसको तकना था उस पर जमी रही और आपके दिल की ताक़त 'मा कज़ाबल फुआदु मा राआ'' उनके दिल ने उसके ख़िलाफ़ नहीं जाना जो उनकी आँखों ने देखा

और आपके सीने मुबारक की ताक़त ''फ़काना क़ाबा क़ौसैनि औ अद्ना'' फिर (जलवये हक़ और हबीबे मुकर्रम में सिर्फ़) दो कमानों की मिक़्दार फ़ासला रह गया था या इससे भी कम और अल्लाह तआ़ला ने वाक़्ये मेअ़राज के शुरु में फ़रमाया सुब्हानल लज़ी जो कि निहायत अहम व इंतिहाई खुशगवार मौक़ेअ़ पर सुबहाना फ़रमाया

जाता है जब दोस्त दुल्हा बनकर घोड़े पर बैठता तो दोस्त व अहबाब कहते हैं सुब्हानल्लाह और आज मुस्तफ़ा के बुर्राक़ पर बैठने की बारी थी न उस वक़्त दोस्त थे न माँ बाप थे तो रब तआ़ला ने फ़रमाया ऐ मेरे प्यारे महबूब तू बुर्राक़ पर बैठ सदायें हमारी तरफ़ से आयेंगी और फिर फ़रमाया 'सुब्हानल्लज़ी' और इस सफ़र में न थकावट हुई न मशक़्क़त हुई बल्कि ये सैर राहत व पुर सुकून रही और क्यों न हो जिसकी ताक़त का जिबराईल व मीकाईल भी मुक़ाबला न कर सकें उसे क्या थकना।

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया ''बिअ़ब्दिहि'' जबकि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के हज़ारों अल्क़ाब व सिफ़ाती नाम हैं मगर आज न नबी न रसूल न मुज़म्मिल न मुदस्सिर न यासीन न ताहा बल्कि बि अ़ब्दिहि फ़रमाया इसलिये कि आज तो अपने घर की तरफ़ रवा'नगी है लिहाज़ा घरेलू लक़ब से याद फ़रमाया कि जब आप मेरे बन्दो के पास गये तो रसूल और रहमतुल लिल आ़लमीन बनकर गये और आज अपने रब के पास आ रहे हैं लिहाज़ा यही लफ़्ज मुनासिब है कायनात वालो तुम हबीब को पुकारो तो आक़ा व मौला या रसूलुल्लाह या हबीबल्लाह कहकर पुकारो और हम पुकारें तो बि अ़ब्दिही और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) लौह व क़लम से भी आगे निकल गये मगर अ़ब्दियत का ताज पहने रहे।

इस मेअ़राजे जिस्मानी व सैरो सियाहत के चार हिस्से हैं पहला हरम से अक़्सा तक और दूसरा अक़्सा से सिदराह तक तीसरा सिदराह से अ़र्श तक चौथा अ़र्श से ला मकान तक और अल्लाह तआ़ला ने इस मेअ़राज के ज़रिये अपने हबीब को कायनात के उ़लूम अ़ता फ़रमाये।

रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) जब मेअ़राज के अस्ल मक़्सद और हिकमत को पाने के लिये अपने रब के फ़रमान की समाअ़त और दीदार की बसारत के लिये कुर्ब की इन्तिहाई आख़िरी मन्ज़िल तक पहुँच गये तो फिर वहाँ क्या हुआ और किस तरह महबूब वापस तशरीफ़ लाये इसका तज़किरा खुद बारी तआ़ला ने सू०-नज्म में इस शान व बयान और अल्फ़ाज़ से इरशाद फ़रमायाः-

''वन्नज्मि इज़ा हवा'' क़सम है रौशन सितारे मुहम्म्द की जब वो उ़रुजे ला मकानी से उतरे यानी जब वो कुर्बे इलाही की बुलन्दियों पर चढ़ रहे थे तो वो अ़ब्दे महबूब थे और जब उस कुर्बे मतलूब व मक़सूद से फ़ैज़याब होकर उतरे तो वो तज़ल्लियाते इलाही से हिदायत का सितारा थे ''मा दल्ला साहिबुकुम वमा ग़वा'' ये महबूब हिदायते कायनात का सितारा हैं लामकां की बुलंदियों पर अकेले ही थे मगर इसके बावुजूद ऐ मुसलमानों ताक़यामत ये रसूल तुम्हारे साथ हमेशा रहने वाले उस जगह न रास्ता भूले न ग़लत राह चले और

आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम सिदराह से लामकान तक जाना और आना तन्हा था और अल्लाह तबारक व तआ़ला ने खुद अपने महबूब को सिखाया तो कौन अन्दाज़ा कर सकता है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने महबूब को कितना इ़ल्म और कितनी अ़क्ल अ़ता फ़रमाई क्योंकि जब खुद ख़ालिक़े कायनात ने अपने महबूब को सिखाया और उ़लूम व दानाई से सरफ़राज़ फ़रमाया और उस कुर्बे जमाल के अ़ब्द ने अपने माअ़बूद से तमाम कुछ ला मकानी में पहुँचकर ख़ल्वते ख़ास मे सीख लिया और उस वक़्त आप बुलन्दियों की सबसे ऊँची चोटी पर थे ''सुम्मदना फ़तादल्ला फ़काना क़ाबा क़ौसनि औ अद्ना'' फिर वो अ़ब्द अपने माअ़बूद से बहुत ही क़रीब हो गया फिर इतना क़रीब कर लिया गया कि दो कमानों के दरमियान या इससे भी क़रीब हो गया तब ''फ़ औहा इला अ़ब्दिहि मा औहा'' उस वक़्त माअ़बूद ने अपने महबूब को जो चाहीं इन्तिहाई राज़ व असरार की बातें बताईं जो किसी को न बताईं।

महबूबे खुदा ने ला मकान में जो कुछ आँखों से देखा दिल ने अपनी गहराईयों से उसकी मुकम्मल तस्दीक़ की तकज़ीब न की यानी आँखों से जो कुछ देखा वो नज़र का धोका न था बल्कि हक़ देखा ''अफ़ातुमारुनहू अ़ला मा यरा'' यानी ऐ क़यामत तक के वे दीनों गुमराह व गुस्ताख़ो क्या तुम मेरे महबूब के दीदारे इलाही के बारे में शक करते हुये झगड़े करते हो व तहरीरी व तक़रीरी

बहस व मुनाज़िरे करते हो और आयत व हदीस को तोड़ मोड़कर उसकी ग़लत तावील व तशरीह करते हो हालाँकि हक़ीक़त ये है ''वलाक़द रआहु नज़्लतन उख़रा इन्दा सिदरतिल मुन्तहा इन्दहा जन्नतुल मावा ''बेशक उस अ़ब्दे महबूब ने अपने माअ़बूद को वापसी के वक़्त उतरते हुये फिर कई बार देखा सिदरतुल मुन्तहां के क़रीब खड़े होकर इसी सिदरतुल मुन्तहां के पास जन्नतुल मावा भी है इसमें अल्लाह तआ़ला को देखने की ताअ़दाद मुअ़य्यन नहीं है ''इज़ यग़शस्सिदरता मा यग़शा'' और जश्ने मेअ़राज की खुशी में मलायका अपने नूरानी जिस्मों व लिबासों और मुख़्तलिफ़ रंगों के नूरानी परिन्दों की रोशनीयाँ बेरी पर छा गई थीं और ये सब कुछ जश्ने मेअ़राज की सजावट का इहतिमाम था और अल्लाह तआ़ला ने कितने अ़ज़ीम अंदाज़ में इस सजावट का ज़िक्र फ़रमाया।

''मा ज़ाग़ल बसरु वमा तग़ा'' रब तआ़ला की तज़ल्लीयात से हमारे अ़ब्द की आँखें इधर उधर न फिरीं और न हैरत व ख़ौफ़ से ज़्यादा खुलीं बल्कि इन्तिहाई खुश गवार अन्दाज़ से उसने अपने रब को देखा।

चूँकि कुरान मजीद ने दीदारे इलाही पर बहुत ज़ोर देकर तज़किरा फ़रमाया इसलिये सहाबाकिराम व ताबईन, तबअ़ ताबईन, मुजतहदीन, फुक़्हा, व उ़ल्मा व सूफ़िया व औलियाकिराम की अक्सरियत यही फ़रमाती है कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु

तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने हालते बेदारी में जिस्म व रुह के साथ रब तआ़ला का दीदार किया।

मुन्किरीने मेअ़राज अपने दलाइल में ये कहते हैं कि मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा तक जाना ख़्वाब में हुआ क्योंकि "इस्राउन" के माअ़नी हैं ख़्वाब मे सैर कराना तो इसका जवाब ये है कि लुग़बी एतबार से ये दलील महज़ बातिल और बे बुनियाद है इसलिये कि कुरान मजीद में ये लफ़्ज़ कई जगह इस्तेअ़माल हुआ है और सब जगह बहालते बेदारी में रात को चलना मुराद है हज़रत लूत (अ़लैहिस्सलाम) को फ़रमाया गया "ऐ लूत अपने ख़ानदान वालों को रात के किसी हिस्से में निकाल कर ले जाओ और तुममें से कोई पीछे मुड़कर न देखे" (सू०-हुद-11/81) व हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को फ़रमाया गया "कि रातों रात तुम मेरे बन्दों को लेकर निकल जाओ"(सू०-ताहा 20/77)

इन दोनों आयातों में असरा का माअ़नी बहालते बेदारी निकलना और जाना है और बिअ़ब्दिहि फ़रमाने से बहालते बेदारी जिस्मन जाना साबित हुआ क्योंकि "अ़ब्द्" जिस्म व रुह दोनों का नाम है और ख़्वाब सिर्फ़ रुह का फ़ेअ़ल होता है।

हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को मेअ़राज में कई तोहफ़े अ़ता हुए पचास फ़र्ज़ नमाज़ों की जगह सिर्फ़ पाँच नमाज़ें-

फ़र्ज़ हुई और गुनाहगार उम्मत की बख़्शिश का वाअ़दा, ख़त्मे नवूबत का ताज, छःगुस्ल मुआ़फ़ हुये, और शरीअ़त, तरीक़त, हक़ीक़त, माअ़रिफ़त के तमाम उ़लूम बग़ैराह आपको बतौर तोहफ़ा अ़ता किये गये।

रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को मेअ़राज कराने में बेशुमार हिकमतें और मक़ासिद हैं मगर अस्ल व हक़ीक़ी हिकमत व मक़सद सिर्फ़ और सिर्फ़ दीदारे इलाही कराना था व अपनी ज़ाते पाक को बेहिजाब दिखाना था इसके अ़लावा जन्नत दोज़ख़ लौह व क़लम अ़र्श व कुर्सी और अम्बिया किराम व जिबराईल और मीकाईल (अ़लैहिमस्सलाम) और मलायका को दिखाना महज़ ज़िमनी तौर पर था क्योंकि ये तमाम चीज़ें और मुलाक़ातें सब कुछ कई मर्तबा ज़मीन पर भी आपको हासिल हो चुकी थी जैसे ज़मीन पर जन्नत दोज़ख़ का मुशाहदा करना हौज़े कौसर को देखना एक शख़्स मुसलमानों में से क़त्ल हो गया लोगों ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह फुलां शख़्स शहीद हो गया आपने फ़रमाया नहीं मैं उसको ख़्यानत व चोरी की वजह से जहन्नुम में देख रहा हूँ एक दफ़ा आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम दोपहर को घर से निकले तो फ़रमाया मैं आ़लमे बरज़ख़ में यहूदियों के अ़ज़ाब की आवाज़ सुन रहा हूँ और आपने देखा जहन्नुम के शोअ़ले एक दूसरे को खा रहे थे और आपके लिये दुनियाँ को समेट दिया गया पस आपने सब

दुनियाँ को मशरिक़ ता मग़रिब सब तरफ़ से देख लिया, ख़ाना-ए-काअ़बा में ईसा अ़लैहिससलाम को देखना, मूसा व युनूस (अ़लैहिमस्सलाम) को देखना और मिश्कात शरीफ़ बाबुल मसाजिद में है कि मैंनें अपने पर'वर दिगार को बेहतरीन सूरत में देखा तो रब तआ़ला ने मुझसे पूछा कि मलायका मुक़र्रबीन किस मुआ़मले में बहस करते हैं मैंने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह तू ही खूब जानता है फिर अल्लाह तआ़ला ने अपना दस्ते अनवर मेरे मूढों के दरमियान रखा जिसकी ठण्डक मैंने अपने सीने में महसूस की और मुझको आसमानों और ज़मीन की तमाम चीज़ों का इ़ल्म हासिल हो गया।

और तिर्मिज़ी की रिवायत में है कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने पूछा ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) तुम जानते हो कि मलायका मुक़र्रबीन किस चीज़ में बहस कर रहे हैं फिर आपने ज़मीन व आसमान की दरमियानी चीज़ों का इ़ल्म हासिल करने के बाद फ़रमाया हाँ मैं जानता हूँ वो गुनाहों के कफ़्फ़ारे पर गुफ़्तगू कर रहे हैं तो माअ़लूम हुआ कि मेअ़राज व उ़रूज का मक़सद व हिकमत सिर्फ़ ला मकान पर बुलाकर दीदारे इलाही कराना था और बारी तआ़ला का दीदार ही ऐसी शैः है कि जिसका नज़ारा ज़मीन के किसी भी हिस्से पर बहालते बेदारी नहीं हो सकता था बाक़ी तमाम अशिया व मलायका को हर हालत में ज़मीन पर भी देखा जा सकता था इसलिये आप (सल्लल्लाहु

तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) सिर्फ़ अपने रब को देखने के लिये आ़लमे ला मकान में तशरीफ़ ले गये और इसमें एक हिकमत ये भी है कि आप तमाम जहानों के लिये रहमत बनाये गये इसलिये तमाम जहानों का मुशाहदा करना आपके लिये ज़रुरी था और एक हिकमत ये भी थी कि ज़ाते मुहम्मदी कमालते कुदरत का बेमिस्ल आअ़ला नमूना हैं और बेमिस्ल शैः सबको दिखाई जाती है

और जिसको दिखाना मक़्सूद हो उसको सबसे बुलन्दी पर बैठाया जाता है ताकि सब देख लें इसलिये मेअ़राज में अल्लाह तआ़ाला ने सबको दिखाया कि ऐ अ़र्शियो व फ़र्शियो लौह व क़लम और समावात के रहने वालो मेरे महबूब को देख लो कौन है तुममें से इसकी मिस्ल।

हज़रत इकरिमा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि-अल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) ने फ़रमाया कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने अपने रब को देखा तो मैंने कहा कि अल्लाह तआ़ाला तो फ़रमाता है कि निगाहें उसे नहीं पा सकती तो इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अन्हुमा) ने कहा कि ये तेरी ख़राबी है ये तो जब है कि वो अपने नूर के साथ तजल्ली फ़रमाये और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने अपने रब को दो बार देखा। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/821- ह०–3279)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–11/242-ह०–11619)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने रब तअ़ाला की ज़ियारत की है हज़रत इकरिमा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि मैंने अ़र्ज़ की ऐ इब्ने अब्बास क्या नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने अपने रब को देखा है तो हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) ने फ़रमाया जी हाँ अल्लाह अ़ज़्ज़ा व जल ने कलाम हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के लिये रखा और खुल्लत हज़रत इब्राहीम अ़लैहिससलाम से रखी और रब तअ़ाला ने अपना दीदार अपने महबूब हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम के लिये रखा। (तबरानी–मुअ़जम औसत–7/266-9396)

मूसा (अ़लैहिस्सलाम) का क़ब्र में नमाज़ पढ़ना

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने सफ़रे मेअ़राज बयान करते हुये फ़रमाया कि मैं मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के पास से गुज़रा तो वो अपनी क़ब्र में खड़े हुये नमाज़ अदा फ़रमां रहे थे।
(मुस्लिम–सही–4/518-ह०–6157)
(नसाई–सुनन–1/549-ह०–1634)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु)

से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं शबे मेअ़राज हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) से मिला और मैंने देखा मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के सर के बाल बिखरे हुये थे और फ़रमाया मैं मिला ईसा अ़लैहिस्सलाम से और मैंने देखा कि वो मेयाना क़द व सुर्ख रंग के हैं और मैंने देखा हज़रत इब्राहीम को और मैं उनकी औलाद में बहुत मुशाबा हूँ।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/704-ह०–3130)
(मुस्लिम–सही–1/282-ह०–424)
(बुख़ारी–सही–3/561-ह०–3396)

मस्जिदे अक़सा में हुजूर का इमामत फरमाना

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने सफ़रे मेअ़राज बयान करते हुये फ़रमाया कि बैतुल मुक़द्दस में तमाम पैग़म्बर इकट्ठा किये गये फिर जिबराईल (अ़लैहिस्सलाम) ने मुझे आगे किया और मैं सबका इमाम बना और मैंने नमाज़ पढ़ाई।
(नसाई–सुनन–1/153-ह०–453)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/162-ह०–3879)

शबे मेअ़राज में फ़र्ज़ नमाज़ों में तख़्फ़ीफ़

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि शबे मेअ़राज अल्लाह तआ़ला ने एक दिन और रात में पचास नमाज़े फ़र्ज़ की जब मैं हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के पास पहुँचा तो उन्होंने कहा कि आपके रब ने आपकी उम्मत पर क्या फ़र्ज़ किया है मैंने कहा हर दिन रात में पचास नमाज़ें फ़र्ज़ फ़रमाईं हैं हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा कि अपने रब के पास जाकर तख़्फ़ीफ़ (कमी) का सवाल कीजिये क्योंकि आपकी उम्मत पचास नमाज़े न पढ़ सकेगी मैं बनी इसराईल को आजमा चुका हूँ फिर मैं अपने रब के पास लौटकर गया और अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी उम्मत पर कुछ तख़्फ़ीफ़ फ़रमां अल्लाह तआ़ला ने पाँच नमाज़ें कर दीं फिर मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने पूछा आपकी उम्मत इतनी नमाज़ें न पढ़ सकेगी जाइये और मज़ीद कमी का सवाल कीजिये

हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के पास और अल्लाह तआ़ला की बारगाह में आने जाने का सिलसिला जारी रहा यानी बारगाहे

ख़ुदावन्दी से हर बार नमाज़ों में कुछ तख़्फ़ीफ़ हो जाती हत्ता कि जब सिर्फ़ पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ रह गईं तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) दिन व रात में पाँच नमाज़ें हैं और इनमें से हर नमाज़ का दस गुना अज्र मिलेगा इसके बाद आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया फिर मैं मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के पास पहुँचा और उनको इन अहकाम की ख़बर दी तो उन्होंने अबकी बार भी यही कहा कि अपने रब के पास जाकर मज़ीद तख़्फ़ीफ़ का सवाल कीजिये फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं इतनी मर्तबा अपने रब की बारगाह में जा जुका हूँ कि अब मुझे जाने में हया आती है।

(बुख़ारी–सही–4/117-ह०–3887)
(बुख़ारी–सही–1/285-ह०–349)
(बुख़ारी–सही–3/455-ह०–3207,6/631-ह०–7517)
(मुस्लिम–सही–1/268-ह०–411)
(नसाई–सुनन–1/153-ह०–452)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/162-ह०–3879)

मेअ़राज के मुताअ़ल्लिक़ कुरैश के सवालात का जवाब देना

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कुरैश मेरे सफ़रे मेअ़राज के मुताअ़ल्लिक़ मुझसे–

सवाल कर रहे थे और उन्होंने बैतुल मुक़द्दस की ऐसी चीज़ों के बारे में सवालात किये जिन्हें (ग़ैर ज़रुरी होने की वजह से) मैंने याद न रखा था मुझे इस बात से इस क़दर ग़म हुआ कि इससे पहले मैं कभी इतना ग़मगीन न हुआ था तो मैं हतीम मे खड़ा हो गया और रब तअ़ाला ने बैतुल मुक़द्दस को मेरी ख़ातिर उठा लिया और मैं उसे देखने लगा लिहाज़ा कुरैश मुझसे जिस चीज़ के बारे में पूछते गये मैं उन्हें बताता गया।
(मुस्लिम–सही–1/285-ह०–430)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/705-ह०–3133)
(बुख़ारी–सही–4/117-ह०–3886)

शबे मेअ़राज की वापसी पर आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने सफ़रे मेअ़राज का वाक़अ़ा बयान फ़रमाया तो कुफ़्फ़ारे मक्का ने आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की तकज़ीब की और आपसे अपने काफ़िले के बारे में दरयाफ़्त किया जो दूसरे मुल्कों से तिजारत करके वापस आ रहे थे हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने उन्हें काफ़िलों के मुताअ़ल्लिक़ बताया और उनके आने के वक़्त और मक़ाम के बारे में ख़बर दी और सब कुछ आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के फ़रमान के मुताबिक़ हुआ। (ख़साइसुल कुबरा–बाव खुसूसियत बिल इसरा–1/280-294)

आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को मेअ़राज आपके जिस्मे अ़तहर के साथ हुई क्योंकि अल्लाह तआ़ाला फ़रमाता है पाक है वो ज़ात जो ले गई अपने बन्दे को मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा तक अल्लाह तआ़ाला ने ये नहीं फ़रमाया कि पाक है वो ज़ात जो ले गई अपने बन्दे की रुह को यानी आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को हालते बेदारी में जिस्म व रुह के साथ मेअ़राज हुई।

इन्सान के आअ़माल को ज़िन्दा और मुर्दा लोग देखते हैं

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
और फ़रमां दीजिये तुम अ़मल करो सो अ़नक़रीब तुम्हारे अ़मल को अल्लाह (भी) देख लेगा और उसका रसूल (भी) और अह्ले ईमान (भी)।
(सू०-तौबा-9/105)

हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुम्हारे आअ़माल तुम्हारे मरे हुये क़राबत दारों और रिश्तेदारों पर पेश किये जाते हैं अगर वो नेक आअ़माल हों तो वो खुश होते हैं और अगर वो नेक आअ़माल न हों तो वो दुआ़ करते हैं ऐ अल्लाह तू उन पर उस वक़्त तक मौत तारी न करना जब तक तू उनको इस तरह हिदायत न दे दे जिस तरह तूने हमें हिदायत दी थी। (मुस्नद अहमद-10/532-12619)

मज़कूरा आयते करीमा और हदीसे पाक से ये बात सराहतन साबित है कि इन्सान के आअ़माल पर फ़ौत शुदा मोमिनीन को मुत्तलाअ़ किया जाता है और तहक़ीक़ नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) हम सबके अच्छे व बुरे तमाम आअ़माल पर मुत्तलाअ़ हैं और आप की निगाहे नबूवत हमारे आअ़माल से बेख़बर नहीं और-

आख़िरत में हम सब उस पाक ज़ात की तरफ़ वापस जायेंगे जो हमारे छुपे व खुले और नेक व बद आअ़माल से ख़बरदार है फिर वो हमें हमारे आअ़माल की ख़बर देगा और सज़ा या अज्र।

नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) अपनी उम्मत ही नहीं बल्कि जहान के सारे कामों का मुलाहिज़ा फ़रमाते हैं और किसी का कोई भी काम आप (अ़लैहिस्सलाम) से पोशीदा नहीं है क्योंकि आप (अ़लैहिस्सलाम) सबके तमाम आअ़माल व ईमान के गवाह हैं और गवाह को मुशाहदा कराया जाता है बाअ़ज़ लोग एक एतराज़ करते हैं कि अगर इस आयत से हुजूर का इ़ल्मे ग़ैब और हाज़िर व नाज़िर व लोगों के आअ़माल का मुशाहदा करना साबित करते हो तो फिर यही सिफ़ात सारे मुसलमानों के लिये भी मानो क्योंकि इस आयत में फ़रमाया गया तुम्हारे आअ़माल को अल्लाह भी देख लेगा और उसका रसूल भी और मोमिनीन भी यानी 'सयरा' का फ़ाअ़िल अल्लाह व रसूल और मोमिनीन सब हैं।

तो इसका जवाब ये है कि अल्लाह तआ़ाला और उसके रसूल के देखने और मोमिनों के देखने में बहुत फ़र्क़ है और देखने की नोअ़य्यत जुदा है मोमिन सिर्फ़ अपने ज़मानों के लोगों के हालात को देखता हैं और अल्लाह तआ़ाला और उसके रसूल हर ज़माने और हर जगह और अंधेरे व उजियाले के हर काम को देखते हैं और अल्लाह तबारक व

तआ़ला तो आ़लिमुल ग़ैब है वो तो कायनात के तमाम ज़ाहिर व पोशीदा बातों व दिलों के मख़्फ़ी राज़ों व पोशीदा बातों पर मुत्तलाअ़ है हत्ता कि इन्सान जो करता है उसे भी जानता है और जो करने वाला है उसे भी जानता है और नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) अपनी नज़रे नबूवत से इन्सानों के आअ़माल का मुलाहिज़ा फ़रमाते हैं गरज़ ये कि अल्लाह व रसूल के देखने और मोमिनों के देखने में ज़मीन व आसमान का फ़र्क़ है।

अल्लाह तबारक व तआ़ला इन्सान की नेकी व बदी देखता भी है और दिखाता भी है यानी अल्लाह तआ़ला की सिफ़त देखना भी है और दिखाना भी है और गुनाहों को छुपाना भी है और मिटाना भी है और अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) सबके सब आअ़माल पहले ही से जानते हैं मगर उनके आअ़माल उनके करते वक़्त देखेंगे और अल्लाह तआ़ला इसलिये देखेगा कि वो समीउल बसीर है और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम इसलिये देखेंगे कि अल्लाह तआ़ला ने अपने प्यारे हबीब (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को हर ग़ायब व हाज़िर और दूर व नज़दीक और अंधेरे व उजाले की ख़बरों का देखने वाला बनाया और मोमिनीन इसलिये देखेंगे कि अल्लाह तआ़ला हर नेक व बद आअ़माल लोगों पर कुदरती तौर पर शाए कर देता है तो ये मोमिनों का देखना है

रसूलुल्लाह मोमिनों की जानों से ज़्यादा क़रीब हैं

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
ये नबी मुकर्रम मोमिनों के साथ उनकी जानों से ज़्यादा क़रीब और हक़दार हैं।
(सू०-अहज़ाब-33/6)

तो जो क़रीब होता है वो हाज़िर व नाज़िर भी होता है और मोमिनों को अपनी जानों और मालों पर तसर्रुफ़ करने का इतना इख़्तियार नहीं है जितना इनकी जानों व मालों पर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को तसर्रुफ़ करने का इख़्तियार है और जब तक किसी शख़्स को ये यक़ीन न हो कि तमाम अहवाल में उसकी जान और उसके माल के रसूलुल्लाह मालिक हैं उस वक़्त तक न वो मोमिन हो सकता है और न ईमान की मिठास को पा सकता है।

रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) अपनी उम्मत पर खुद उनकी जानों से ज़्यादा शफ़ीक़ व मेहरबान हैं इसलिये नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को उम्मत की जानों से ज़्यादा इख़्तियार हासिल है और तकमीले ईमान के लिये शर्त है मोमिनीन में से बाअ़ज़ को बाअ़ज़ से जो कुर्ब हासिल है उससे कहीं ज़्यादा कुर्ब नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला-

अ़लैहि वसल्लम) की ज़ाते अक़दस से है क्योंकि आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) तो उनकी जानों से भी ज़्यादा उनसे क़रीब हैं इसलिये आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को हर मुआ़मलात में सबसे ज़्यादा इख़्तियार हासिल है।

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं हर मोमिन के लिये उसकी जान से ज़्यादा क़रीब तर हूँ सो जिसने कोई कर्ज़ छोड़ा तो उसकी अदायगी मेरे ज़िम्मे है और जिसने कोई माल छोड़ा हो तो वो उसके वारिसो का है। (नसाई–सुनन–1/599-ह०–1581)
(अबू दाऊद–सुनन–4/656-ह०–3343)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मैं तमाम मोमिनीन का दुनियाँ व आख़िरत में सबसे ज़्यादा क़रीब और ख़ैर ख़्वाह हूँ अगर तुम चाहो तो ये आयत पढ़ लो '' ये नबी ईमान वालों से उनकी जानों की निसबत ज़्यादा क़रीब हैं'' इसलिये कि जो मोमिन मरते वक़्त जो माल व दौलत छोड़ जाये तो उस माल के वारिस उसके अ़ज़ीज़ व अक़ारिब होंगे लेकिन अगर किसी मोमिन ने कर्ज़ छोड़ा या औलाद छोड़ी है तो वो मेरे पास आ जाये मैं उसका ज़िम्मेदार और मददगार हूँ।
(बुख़ारी–सही–4/725-ह०–4781)

–:हयातुन्नबी अहादीस की रोशनी में:–

ज़मीन पर हराम कि अम्बिया के जिस्मों को खाये

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जुमआ़ के दिन मुझ पर ज़्यादा से ज़्यादा दुरुद भेजा करो क्योंकि ये योमे मशहूद (हाज़िर होने का) दिन है इस दिन फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं और जब कोई शख़्स मुझ पर दुरुद भेजता है उसके फ़ारिग़ होने तक मेरे सामने उसका दुरुद मुझे पेश किया जाता है अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) कहते है मैंने अ़र्ज़ किया कि आपकी वफ़ात के बाद (क्या होगा) तो आपने फ़रमाया कि मेरी वफ़ात के बाद भी हर दुरुद पढ़ने वाले का दुरुद मुझ पर पेश किया जायेगा फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन के लिये अम्बिया किराम के जिस्मों को खाना हराम कर दिया है पस अल्लाह का नबी ज़िन्दा होता है और उसे रिज़्क़ दिया जाता है।

(अबू दाऊद–सुनन–2/204-ह०–1531)
(इब्ने माजा–सुनन–1/554-ह०–1636)
(नसाई–सुनन–1/457-ह०–1377)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–2/238-ह०–2582)

सहाबा किराम के अजसाम का अपनी क़ब्रों में सहीह व सालिम रहना

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) बयान करते हैं कि जब उहद का वाक़्या पेश आया तो मेरे वालिदे गिरामी हज़रत अब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) ने मुझे उस रात बुलाया और मुझे फ़रमाया कि मेरे गुमान के मुताबिक़ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के सहाबा किराम (रज़िअल्लाहु तआला अन्हुम) में से जो शहीद होंगे उनमें पहला मक़्तूल मैं खुद होऊँगा और मैं आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ज़ाते करीमा के सिवा अपने बाद किसी को तुझसे ज़्यादा अज़ीज़ नहीं छोड़ रहा हूँ मुझ पर क़र्ज़ है उसे अदा कर देना और अपनी बहनों से अच्छा बरताव करना सुबह हुई तो सबसे पहले शहीद होने वाले वही थे चुनांचा उनके साथ क़ब्र में एक दूसरे शहीद को भी दफ़न कर दिया था लेकिन मेरे दिल को ये बात अच्छी न लगी कि मैं अपने वालिदे गिरामी को दूसरे शख़्स के साथ छोड़ रहा हूँ इसलिये मैंने छः माह बाद उन्हें क़ब्र से निकाल लिया वो उसी तरह थे जिस तरह मैंने उन्हें दफ़न किया था सिर्फ कान का थोड़ा हिस्सा मुतास्सिर हुआ था।

(बुख़ारी–सही–2/114-ह०–1351)

हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) की क़ब्रे अनवर की ज़ियारत

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने मेरी वफ़ात के बाद मेरी क़ब्र की ज़ियारत की गोया उसने मेरी हयात में मेरी ज़ियारत की।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–12/406-ह०–13496)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–3/388-ह०–4154)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि मैं उस हुजरे में (बग़ैर हिजाब) दाख़िल हो जाया करती थी जहाँ आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) और मेरे वालिद (हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़) दफ़न थे और मैं चादर नहीं ओढ़ती थी (यानी मुँह नहीं ढाकती थी) कहती थीं कि वहाँ कोई नहीं है मगर मेरे ख़ाविन्द हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम और मेरे वालिद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ लेकिन जब हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) वहाँ दफ़न हुये तो खुदा की क़सम मैं हज़रत उ़मर से शर्म की वजह से तमाम बदन छुपाये बग़ैर उस हुजरे में दाख़िल नहीं होती थी।
(मिश्कात–1/411-ह०–1679)

मय्यत का कहना कहाँ लिये जा रहे हो

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब जनाज़ा रखा जाता है और जब आदमी उसको अपने कंधों पर उठा लेते हैं पस अगर वो (मय्यत) नेक हो तो कहती है कि मुझे जल्दी ले जाओ और अगर वो नेक न हो तो वो कहती है कि अफ़सोस तुम हमें कहाँ ले जा रहे हो इस आवाज़ को इन्सानों के अ़लावा हर चीज़ सुनती है अगर इन्सान सुन ले तो बेहोश हो जाये। (बुख़ारी–सही–2/96-ह०–1314)

मय्यत की हड्डी तोड़ना ज़िन्दा की हड्डी तोड़ने के मुतरादिफ़

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) फ़रमाती हैं हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मय्यत की हड्डी तोड़ना ज़िन्दा की हड्डी तोड़ने के बराबर है। (इब्ने माजा–1/546-ह०–1616)

हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) का क़ब्र वालों से मुख़ातिब होना

➡ हज़रत बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) जब क़ब्रों पर तशरीफ़ ले जाते

तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) फ़रमाते ऐ मोमिनों तुम पर सलाम है और ऐ मुसलमानों तुम पर सलाम है और ऐ मुसलामानों के घर वालो तुम पर सलाम है और अल्लाह तआ़ला ने चाहा तो हम तुमसे मुलाक़ात करेंगे तुम हमसे आगे गये हो और हम तुम्हारे पीछे हैं मैं अल्लाह तबारक व तआ़ला से सलामती चाहता हूँ तुम लोगों के वास्ते और अपने वास्ते। (नसाई–3/661–ह०–ह०–2044)

हुजूर अ़लैहिस्सलाम का बदर के मक़्तूलीन से ख़िताब

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है वो फ़रमाते हैं कि हम हज़रत ऊ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के हमराह थे मक्का और मदीना के माबैन फिर आप ने हमें अहले बदर के मुताअ़ल्लिक़ हदीस बयान फ़रमाई पस उन्होंने फ़रमाया कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने हमें कुफ़्फ़ार के साथ लड़ाई शुरु होने से एक रोज़ पहले दूसरे रोज़ क़त्ल होने वाले कुफ़्फ़ारों की जाए हलाकत दिखा रहे थे और आप फ़रमाते जाते थे कि इन्शा अल्लाह कल ये फुलां काफ़िर का मक़्तल होगा और ये फुलां के क़त्ल होने की जगह है हज़रत ऊ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं उस ज़ात की क़सम जिसने आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) को हक़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया उन कुफ़्फ़ारों–

के मुताअ़ल्लिक़ आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने जो जगह मुतय्यन फ़रमाई थी वो उन हुदूद से ज़रा भी इधर उधर न गिरे फिर उनको एक दूसरे के ऊपर बदर के कुऐं में डाल दिया गया फिर आप सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम चले हत्ता कि उनके पास पहुँच गये और फ़रमाया ऐ फुलां इब्ने फुलां क्या तुमने उस वाअ़दे को पा लिया जो अल्लाह ने और उसके रसूल ने तुम्हारे साथ किया था तहक़ीक़ कि मैंने उस वाअ़दे को हक़ पाया जो अल्लाह तअ़ाला ने मेरे साथ किया है हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) ने आप सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम से अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह आप इन मुर्दा कुफ़्फ़ारों के साथ कैसे कलाम फ़रमां रहे हैं जिनके अन्दर रुह नहीं है तो फिर आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो कुछ भी मैं इनसे कह रहा हूँ तुम इन मुर्दा कुफ़्फ़ारों से ज़्यादा नहीं सुन रहे। (मुस्लिम–सही–6/403-ह०–7222)
(बुख़ारी सही–4/202-ह०–4026, 2/126-ह०–1370)
(अबू दाऊद–सुनन–3/172-ह०–2681)
(इब्ने हिब्बान–सही–7/501-ह०–6498)

अल्लाह के मुक़र्रब बन्दे क़ब्रों में ज़िन्दा होते हैं

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि एक सहाबी ने एक क़ब्र पर ख़ेमा लगाया ये न जानते हुये कि–

यहाँ क़ब्र है फिर अचानक पता चला कि ये क़ब्र है और उसमें सूरह मुल्क़ पढ़ी जा रही है यहाँ तक कि पढ़ने वाले ने उसे ख़त्म कर लिया वो सहाबी नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और सारा हाल बयान किया तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया–ये सूरत अ़ज़ाबे क़ब्र को रोकने वाली और उससे निजात देने वाली है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/548-ह०-2890)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–2/495-ह०-2510)

–: कलमे की तशरीह :–

ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (यानी अल्लाह के सिवा कोई माअ़बूद नहीं मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) अल्लाह के रसूल हैं) इस कलमे का माअ़ना इस बात पर दलालत करता है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ज़िन्दा हैं और अगर कोई ये कहे कि हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल थे तो कलमे का माना ही बदल जायेगा और ये कलमा ता क़यामत तक नहीं बदलेगा और ईमान की इब्तिदा इसी कलमे पर मौक़ूफ़ है।

वल्लाहु तआ़ला आ़लम०

व आख़िरुद्दअ़वाना अ़निल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन०

अल्ह़म्दुलिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन अल्लाह तबारक व तआ़ला का लाख लाख शुक्र व एहसान है कि जिसके फ़ज़्लो करम व तौफ़ीक़ और उसके हबीब नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की इ़नायत व रहमो करम और उनके तुफ़ैल और अह्ले बैत अत्हार के फ़ैज़ व नज़रे करम व तमाम सहाबा किराम व जुमला औलिया किराम के फ़ैज़े रुहानी व बरकात से मैंने इस किताब की ताअ़लीफ़ की है अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने मुझ हक़ीर सरापा तक़सीर से जो काम लिया है हक़ीक़तन मैं क़तई इसके क़ाबिल न था

अल्लाह तआ़ला इस किताब को अपनी बारगाह में शरफ़े मक़बूलियत अ़ता फ़रमाये और क़यामत तक लोगों के लिये इस किताब को फ़ैज़ रसाँ रखे व मेरी ज़िन्दगी व आख़िरत ईमान बिल ख़ैर पर क़ायम रखे व तमाम उम्मते मुस्लिमा को हिदायत अ़ता फ़रमाये और अपनी व अपने हबीब और अहले बैत अत्हार व सालिहीन की मुहब्बत से दिलों को मुनव्वर व मुनज़्ज़ाह फ़रमाये और क़ल्ब व रुह को मुज़य्यन फ़रमायें और तमाम मुहिब्बाने अहले बैत की मग़फ़िरत फ़रमाये। **आमीन**

इस किताब को बराहे ईसाले सवाब मेरे वालिदे गिरामी जनाब ईद मुहम्मद साहब क़िब्ला की रुह को अल्लाह तआ़ला अज्रे अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाये और अपने प्यारे हबीब के सद्क़े व तुफ़ैल उनकी मग़फ़िरत फ़रमाये। **आमीन** .....★★★★★